भू दर्शन

आस्ट्रिया

आस्ट्रिया
के
कुछ लेख
१—वर्तमान तथा प्राचीन आस्ट्रिया।
२—आस्ट्रिया के निवासी
३ रीति रिवाज और रहन सहन
४—आस्ट्रिया वालों के खेल कूद
५—पहाड़ों का मौसमी संदेश या

दिसम्बर १९३९] **देश-दर्शन** [मार्गशीर्ष १९९६

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या ७]

आस्ट्रिया

[वर्ष १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs 6/-
Single copy As. -/6-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
एक प्रति ।=)

विषय-सूची

आस्ट्रिया

पहला अध्याय

देश

जितने भी देश सन् १९१४ ई० की बड़ी लड़ाई में शामिल हुए आस्ट्रिया ही एक ऐसा देश है जो १९१८ ई० में बहुत अधिक बदल गया। आस्ट्रिया-हंगरी का बड़ा राज्य जो मध्य योरुप में फैला हुआ था और जिसके पश्चिम में स्विट्ज़रलैण्ड, पूर्व में रूस उत्तर में सैकसनी तथा पोलैण्ड और दक्षिण में एड्रियाटिक समुद्र और बालकन प्रायद्वीप थे। वह बिलकुल छिन्न भिन्न हो गया। केवल इसका मध्यवर्ती भाग शेष रह गया जो अब तक प्रजातंत्र राज्य था किन्तु पिछले साल जर्मन साम्राज्य का एक अंग बन गया है। इस समय इस का क्षेत्र फल आयरलैण्ड के बराबर है और हंगरी निकल

जाने के कारण पहले का अब यह चौथाई से भी कम है। पुराने साम्राज्य की जन-संख्या पाँच करोड़ से भी अधिक थी किन्तु अब इसकी जन संख्या केवल सत्तर लाख के लगभग है जो लन्दन से कम है।

आस्ट्रिया देश योरुप के मध्य में है। इसका आकर कुछ कुछ नाशपाती का सा है। यह योरुप के बीचो बीच स्थित है। उत्तर में जर्मनी और चेकोस्लोवेकिया दक्षिण में इटली और यूगोस्लैविया तथा पश्चिम में स्विटज़रलैण्ड और पूर्व में हंगरी तथा चेकोस्लेवेकिया है। यह अब जर्मन साम्राज्य का एक अंग बन गया है।

लगभग सभी आस्ट्रिया प्रदेश पहाड़ी है। अल्प्स पर्वत जो सारे स्विटज़रलैण्ड में फैला है इस प्रान्त में होता हुआ वियना नगर तक जाता है। अल्प्स पर्वत की नुकीली श्रेणियाँ दक्षिण की ओर डैन्यूब नदी का बेसिन बनाती हैं। इस कारण यह देश स्विट्ज़रलैण्ड की अपेक्षा अधिक दृश्यों में धनी हो गया है। जैसे यात्री स्विटज़रलैण्ड यात्रा के लिये जाते हैं वैसे ही यहाँ भी भ्रमण करते हैं। डैन्यूब की प्रसिद्ध नदी प्रसिद्ध ऐतिहासिक भूमि में होकर बहती है। यह नदी जर्मनी के

★ आस्ट्रिया ★

पास से वियना के पूर्व जहाँ आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया और हंगरी मिलते हैं वहाँ तक बहती है।

पहाड़ी श्रेणियों, नदियों और मैदानों के कारण आस्ट्रिया मध्य योरुप का केन्द्र है। यह बात वियना राजधानी के लिये और अधिक ठीक है क्योंकि आसपास चारों ओर के राष्ट्रों के प्रधान मार्ग यहाँ मिलते हैं और इसी कारण से वियना प्राचीन समय से ही एक प्रसिद्ध नगर रहा है। यह नगर डैन्यूब नदी पर बसा है। इसकी स्थिति एक ऐसे स्थान पर है जहाँ से सेमरिङ घाट (दर्रा) होकर एड्रियाटिक और रूमसागर को रास्ता है। इस रास्ते के ठीक उत्तर में एक दूसरा रास्ता है जो बोहेमियन और कार्पेथियन पहाड़ों के बीच होकर ओडर, विश्चुला और बाल्टिक को जाता है। यह प्राचीन रास्ता ("ऐम्बर रूट") बहुत पुराना है और पहले इस रास्ते से होकर बाल्टिक और एड्रियाटिक समुद्रों के व्यापारी क़ीमती पत्थरों का व्यापार करते थे। चूँकि डैन्यूब नदी का रास्ता जर्मनी से ऊँचा है इस लिये आजकल के इन्जीनियर इस बात की कोशिश में हैं कि वह नहरों द्वारा इस नदी का पानी राइन नदी और नार्थ सी (उत्तरी सागर) से मिला दें। इसके पहले चारलेमन ने भी ऐसा

करना चाहा था किन्तु निष्फल हुआ। वियना में फ्राँस और दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों से सड़कें और रेलवे लाइनें आती हैं जो बालकन प्रायद्वीप और पास वाले दूसरे पूर्वी देशों को जाती हैं। इसी रास्ते से होकर दूसरी जातियों और क्रूसेडर्स के हमले टर्की और कान्स्टेन्टीनोपुल (कुस्तुन्तुनिया) पर हुए। बाद को इसी रास्ते से पूर्वी सभ्यता आई जिसने मध्यकालीन अँधेरे का सत्यानाश किया।

ब्रेनर घाट (दर्रे) के ऊपर होकर इटली से एक सड़क आती है जो इन्सबर्ग होकर जर्मनी और दूसरे उत्तर के देशों को जाती है। इन्सबर्ग पर यह सड़क पश्चिमी रास्ते को काटती है। मध्यकाल में वेनिस और जर्मन नगरों के कारवां (काफिले) और यात्री इसी सड़क होकर आया जाया करते थे और असंख्य यात्री और दूत रोम को जाते थे, जब कि पोप योरुप के अधिकांश भाग पर सेन्ट पीटर्स के समय से राज्य करता था।

ऐसी स्थिति धन और युद्ध दोनों को पैदा करने वाली होती है। इसी से वियना के ऊपर चारों ओर से भिन्न भिन्न समयों में आक्रमण हुए। २ हज़ार वर्ष पहले

★ आस्ट्रिया ★

रोमन लोग दक्षिण-पश्चिम के रास्ते से यहाँ आए और पहले पहल उन्होंने इस छोटी सी जगह का मूल्य समझा। लोगों में वियना नगर की ख्याति होने वाली थी। सातवीं शताब्दी में जब तुर्कों का आक्रमण डैन्यूब के रास्ते वियना पर हुआ तो पोलैण्ड के जान ने उत्तरी-पूर्वी रास्ते से आकर इसकी रक्षा की। नेपोलियन ने भी पश्चिम की ओर से चढ़ाई की और कुछ दिनों तक राज्य भी किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि अब तक लगभग प्रत्येक शताब्दी में वियना पर आक्रमण होते चले आये।

यह ऊँचे आवश्यक मार्ग सदैव चालू रहते हैं चाहे शान्ति का समय हो और चाहे युद्ध का समय हो। इन मार्गों में या तो माल लादे घोड़ों के काफिलों का झुण्ड दिखाई पड़ता है या सेनाओं का जमघट होता है। वर्तमान समय में यह मार्ग तो और भी अधिक ज़रूरी होगये हैं क्योंकि सड़कें और रेलवे लाइनें दोनों साथ साथ विद्यमान हैं और राष्ट्रों के बीच पहले से अधिक माल आता जाता है।

आस्ट्रिया अब बिलकुल छोटा सा देश रह गया है और जो प्राकृतिक सुविधाएँ उसे पहले थीं वह अब नहीं

रह गई। यद्यपि यह देश अपने समीपवर्ती स्विट्ज़रलैण्ड से कुछ ही बड़ा है और एक स्थली टापू की भांति है तो भी इसका गौरव कम नहीं है। यह योरुप के प्रसिद्ध सड़कों के जंकशन पर स्थित है। प्रत्येक वर्ष यहां बाहरी यात्री, तथा शरद् और ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियां बिताने वाले लोग आते हैं और यहां के सुन्दर अनुपम देहाती दृश्यों का आनन्द उठाते हैं। प्रेग और बुडापेस्ट के निकल जाने के कारण वियना के महाजनी रोजगार और जनसंख्या में कमी हो गई है। यहां फिर भी जर्मन सभ्यता, भाषा, इतिहास, संगीत, कला-कौशल, विज्ञान आदि भली भांति उन्नति पर हैं। आस्ट्रिया देश नौ प्रान्तों में बंटा है जिसमें से वियना एक प्रान्त है। सभी प्रांत एक राष्ट्र के अन्दर स्वतंत्र हैं। यहां के लोगों का देश-प्रेम और आत्म सम्मान देश के लिये न होकर प्रान्तों के लिये अधिक है। स्टीरियन पर शासन गराज़ से और टायरल पर इंसबर्ग से वियना की अपेक्षा अधिक होता है। लोअर आस्ट्रिया जो सब से बड़ा प्रान्त है राजधानी को घेरे हुए है और अपर आस्ट्रिया से डैन्यूब नदी में जाकर मिलता है। बर्गनलैण्ड, वियना के

★ आस्ट्रिया ★

दक्षिण एक लम्बी पट्टी हङ्गरी के सरहद के ठीक सामने है। स्टीरिया और केरिन्थिया दोनों प्रान्तों में कला-कौशल की वस्तुयें बहुत अधिक बनती हैं और दोनों प्रांतों में सुन्दर अलौकिक पहाड़ी दृश्य हैं। केरिन्थिया की नदी ड्रेव है जो तीन झीलों में होकर बहती है। स्टीरिया प्रान्त की मूर नदी इस की सहायक है। साल्ज़वर्ग और टायरल (पहाड़ों के भीतर का देश) प्रान्त छुट्टी आनन्द पूर्वक बिताने वालों के लिये प्रसिद्ध हैं। वोरालवर्ग, टायरल और स्विट्ज़रलैण्ड के बीच का प्रान्त है जो वियना को छोड़ कर सभी से छोटा है।

पहाड़ जो देश का अधिकांश भाग घेरे हुए हैं उनकी श्रेणियां पश्चिम से पूर्व समानान्तर फैली हुई हैं। इन श्रेणियों के बीच गहरी घाटियाँ हैं। इनकी सहायक और घाटियाँ हैं जो आगे चल कर दोनों सिरों पर छोटी पहाड़ियाँ बनाती हैं। प्रत्येक छोटे 'ताल' (घाटी) के दोनों ओर पहाड़ी दीवालें हैं जिनको 'क्लाम' कहते हैं। इन दीवालों में छोटे छोटे पानी के सोते और झरने हैं जो बलूत के पेड़ों में आधे छिपे रहते हैं। 'इन' नदी टायरल प्रान्त में बहती है और उसके सहायक छोटे नदी-नाले दायें बायें से आकर मिलते हैं। इसके देखने से

प्रतीत होता है कि कदाचित् कोई बड़ी मछली पड़ी है और उसके पीठ की हड्डियाँ पहाड़ों में घुसी हैं।

यद्यपि यहाँ की भूमि स्विट्ज़रलैण्ड की सी है तो भी वहां से यहाँ कहीं कम खराब और पथरीली भूमि है। यहाँ की भूमि तीन भागों में विभाजित है। एक तिहाई वह भूमि है जिसमें अनाज, फल, अंगूर मेवों के बाग़ और अच्छी क़ीमती घास होती है। दूसरी तिहाई भूमि में लार्च और बलूत के जंगल हैं और शेष तिहाई भूमि पहाड़ी होते हुए भी लाभदायक है और यहाँ असंख्य चरागाह हैं। यहाँ ऊँचे ढालों पर भी चरागाह हैं।

बड़े बड़े खेत पूर्व की ओर अल्प्स श्रेणियों के बीच नीचे मिलते हैं। डैन्यूब नदी के बेसिन में वियना के आस-पास, बर्गेनलैण्ड में हंगेरियन मैदानों में और कैरिनथिया में ड्रावे की चौड़ी घाटी में खासी खेती होती है। यहाँ गेहूँ और मक्का की पैदावार होती है। डैन्यूब की घाटी के समीप अंगूर के खासे बड़े बड़े बाग़ हैं। आस्ट्रिया के मध्य में जहां भूमि पर्वतीय हो जाती है, राई की उपज होती है। अधिकांश स्थानों पर जंगल हैं जहाँ पर लकड़ी के कारखाने हैं। जो बहुत ही आव-

श्यक हैं और यहाँ के लोगों की जीविका के साधन हैं। इन छोटी छोटी पर्वतीय श्रेणियों को "अल्प्स" कहते हैं।

शीत काल में निचले मैदान भी बरफ़ से ढके रहते हैं। अधिक ऊँचे स्थान साल भर बरफ़ से ढके रहते हैं। इस समय जानवर घाटियों में रात दिन छप्परों के नीचे रहते हैं। गर्मी के दिनों घास और जड़ें इकट्ठी कर ली जाती हैं और जाड़े में वही सूखी घास और जड़ें जानवरों को खाने के लिये दी जाती हैं। जिसको घोड़े, बरफ़ से ढकी सड़कों द्वारा बरफ पर चलने वाली गाड़ियों पर लाद कर लाते हैं। अल्प्स के ढालों पर ग्रीष्म काल में वर्षा होती है। और कभी कभी वियना और उसके आस पास बहुत ही कड़ी धूप होती है इसके सिवा साल भर जलवायु बहुत ही अच्छी और शान्त रहती है।

डैन्यूब और वियना को छोड़ कर आस्ट्रिया के पर्वतीय दृश्य ही कदाचित् उसके सब से बड़े जादू हैं। वसन्त ऋतु का अंत और ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ ही में सब से अच्छा समय यहाँ रहने योग्य होता है क्योंकि इस समय घाटियों से बरफ हट जाती है और ऊँचे पहाड़ों पर सिमट कर रहती है जो अत्यन्त सुन्दर और

शोभायमान होती है। गहरे हरे बलूत के जंगल जो ढालों पर हैं पहाड़ों को घाटियों से मिलाते हैं। जब सूर्य का प्रकाश उन पर पड़ता है तो वे हवा को अनुपम सुन्दर और सुगन्धित कर देते हैं। इन जंगलों के ऊपर और बर्फ़ीले पर्वतों के नीचे 'अल्प्स' हैं। इन हरी भरी चरागाहों में कहीं कहीं लकड़ी की झोपड़ियां बनी हैं जहां लड़कियाँ अकेले रहा करती हैं और गाय बकरियां चराया करती हैं। जब बरफ़ गिरने लगती है तो ये लड़कियां इन स्थानों को छोड़ देती हैं। घाटियों में छोटे छोटे गाँव कहीं कहीं बसे रहते हैं जिनमें छोटे छोटे खेत, घर और झोपड़ियां होती हैं। आस्ट्रिया के देहातों में शायद ही कोई स्थान ऐसा मिले जहां पर चर्च (गिरजा) न दिखाई पड़ता हो। प्रत्येक गांव में बहुधा छोटे चर्च होते हैं। जहां चार घरों की बस्ती हुई कि वहां एक चर्च बन गया। बहुधा चर्च के गुम्बद पर तांबे के कलस रहते हैं जो पियाज़ की शकल के होते हैं। किन्तु अधिकतर गिरजाघरों के ऊपर लम्बे, नुकीले मीनार होते हैं जिनकी नोक बहुत ही अधिक ऊँची होती हैं।

यहाँ के घर तथा गिरजाघर सभी रँगे रहते हैं।

★ आस्ट्रिया ★

यह दूर से एक रँगी गुड़िया की भांति मालूम पड़ते हैं। गिरजाघरों की दीवालें चमकीली श्वेत होती हैं। गुम्बद और मीनारें चमकीले या हरे रँग से रँगी होती हैं। घरों के लकड़ी के काम देहाती भूरे रँग के होते हैं किन्तु दीवालें लाल गुलाबी रंग या नीले चमकीले रंग से रंगी होती हैं। खिड़कियाँ, चिक और पर्दे सभी रंगे होते हैं। फूलदार बेलें देहलियों, बरामदों और छज्जों पर लगी रहती हैं। बसन्त और ग्रीष्म ऋतु में सभी रंग के फूल घाटियों और घास के मैदानों में होते हैं।

यहाँ के निवासी दृश्यों को और अधिक रंगीला बना देते हैं। खास कर गर्मी में जब स्त्रियां घास के मैदानों में चमकीले नीले कपड़े पहन कर और सुनहरे तिनकों के टोप देकर निकलती हैं। मनुष्य छोटी बैलगाड़ियों को लादने के लिये रंगीन कमीज़, रंगीन बेलदार जांघिया, फ़ीतेदार हरे टोप देकर निकलते हैं। घाटियों में नदियां ग्लेशियरों से भरी रहती हैं, उनके आसपास सिवार जमी रहती है और नदियों के ऊपर झुके हुये काले जंगल दिखाई देते हैं सब से बढ़ कर यहां की पहाड़ी बर्फ़ीली चोटियां होती हैं जो अपना रंग बादलों की चाल के अनुसार बदलती रहती हैं कभी श्वेत तो कभी नीली

और कभी कभी भूरी धुँधली होजाती हैं। अर्थात् बादलों की छाया के अनुसार उनका रंग बदलता है संध्या को सूर्यास्त के समय का दृश्य बड़ा भड़कीला, सुन्दर तथा अनोखा होता है।

आस्ट्रिया में बिजली नदियों की धार से पैदा की जाती है। जिससे अधिक शक्तिशाली तथा बहुत ही सस्ती पड़ती है। लगभग सभी घरों में बिजली की बत्ती जलती है। लकड़ी चीरने के कारखाने और दूसरे कारखाने सभी बिजली से चलते हैं। भाप से चलने वाली रेलगाड़ियाँ दिन प्रतिदिन कम होती जा रही हैं और बिजली द्वारा चलाई जाती हैं। टायरल की सभी लाइनों में बिजली लगी है इस लिये वहां कोई भी मनुष्य योरुप के सब से सुन्दर और अलौकिक दृश्य का मजा ले सकता है। यहाँ न तो बादलों और कुहरे के कारण अँधेरा रहता है और न इञ्जन का धुवां ही होता है।

आस्ट्रिया जाने के लिये सब से सुन्दर रास्ता स्विटज़रलैण्ड से पेरिस-कान्स्टेन्टीनोपुल एक्सप्रेस द्वारा है। रेलवे लाइन फेल्डकिर्च स्थान पर देश के अन्दर

प्रवेश करती है। बोरलबर्ग में यह लाइन प्रान्त को पार करती है इसके पश्चात् अर्लबर्ग घाट पार कर टायरल प्रदेश में नीचे उतरती है, और फिर इन्सबर्ग और साल्सबर्ग को जाती है। यह अनुपम दृश्यों और इञ्जीनियरों के अलौकिक कार्य्यों के कारण दुनिया में सब से अच्छी रेलवे लाइन है। यह लाइन पहाड़ काट कर ले जाई गई है। कहीं तो इसमें खंदकों और नालों में सुंदर पुल बंधे हैं और कहीं मेहराबदार सुंदर छतें हैं। इसके सिवा इस लाइन का रास्ता पहाड़ के नीचे खोद कर बनाया गया है। इस रास्ते से आने में मनुष्य पहाड़ों के हर एक भांति के दृश्य देख सकता है। पहाड़ी घाट के नीचे और समुद्र-तल से ४००० फुट ऊँचाई पर एक ६ मील का रास्ता पहाड़ के नीचे होकर है। यह रास्ता पहाड़ों से निकलने के बाद क्रमशः 'रोसाना' और 'इन' घाटियों में उतरता है। इस लाइन के इधर उधर जंगल, गाँव झरने, किले, खेत, झोपड़े आदि सभी प्रकार के दृश्य देखने को मिलते हैं।

इसके सिवा कहीं कहीं पहाड़ी रेलवे लाइनें हैं। प्राचीन बैलगाड़ियों के रास्ते जो पहाड़ों पर जाते थे अब नहीं हैं। इन रास्तों के स्थान पर लोहे के रस्सियों की

लाइनें हैं। ये लोहे की बड़ी रस्सियां पहाड़ों के चोटियों से लेकर घाटियों तक फैली रहती हैं। इन पर छोटी छोटी गाड़ियां चलती हैं जिन पर पन्द्रह या बीस आदमी बैठ सकते हैं। ये गाड़ियाँ जो लटकी हुई दिखाई पड़ती हैं। चढ़ने वालों को हवा में नीचे से ऊपर पहाड़ की चोटी तक ले जाती हैं।

सीलबन गाड़ियों पर यात्रा करना एक अनोखे अनुभव का करना है। पहले पहल जब मनुष्य इन पर चढ़ता है तो नीचे देखने में उसे डर लगता है। गाँव, घर जो नीचे रहते हैं धीरे धीरे छोटे होते जाते हैं और अंत में एक नमूने की भांति बन जाते हैं। इन गाड़ियों पर मनुष्य चिड़ियों की भांति धीरे धीरे जंगलों, खेतों और चरागाहों के ऊपर होकर उड़ते हैं। उन्हें गाय-बैलों की घंटियों की आवाज़ टिन टिन बहुत धीरे धीरे सुनाई पड़ती है। जैसे जैसे मनुष्य ऊपर उड़ता है उसको साफ और शुद्ध वायु मिलती जाती है, अंत में वह पहाड़ पर जाकर उतर पड़ता है।

रेलवे लाइनों की भांति आस्ट्रिया की कुछ सड़कें भी देखने योग्य हैं। ये सड़कें घाटियों के किनारे किनारे

चक्कर देती हुई नदियों को पार करती हैं। इन नदियों पर सुन्दर ठोस पुल बने हैं। इन सड़कों का ऊँचा-नीचा टेढ़ा समतल मार्ग अत्यन्त शोभायमान तथा मनोरंजक होता है। ये सड़कें यहां की कला-कौशल के उदाहरण हैं।

इस प्रकार यह देश बड़ी लड़ाई में इतना हानि उठाते हुये और कंगाल होते हुये भी आज बहुत सी बातों में योरुप भर में सब से बढ़ कर है। स्वाभाविक और प्राकृतिक सुन्दरता में यह देश किसी भी देश से कम नहीं है। यहाँ के निवासी प्रसन्न चित्त, अच्छी चाल-चलन वाले और दोस्ताना बरताव करने वाले होते हैं। इस कारण इस देश की सुन्दरता और भी अधिक बढ़ जाती हैं। आस्ट्रिया एक प्राचीन ऐतिहासिक देश है। सभ्यता और विशेष कर गान विद्या का यह केन्द्र रहा है। वियना, साल्सबर्ग, ग्राज़ और अन्य नगर ऐतिहासिक बातों के लिये प्रसिद्ध हैं।

दूसरा अध्याय

—:o:—

वर्तमान तथा प्राचीन आस्ट्रिया

बारह सौ साल पहले चारलामैन ने आस्ट्रिया पर अपना अधिकार जमाया। यह पहला सब से अधिक पूर्वी देश था जहाँ उसका अधिकार हुआ इसलिये इसका नाम जर्मन आस्ट्रिया (पूर्वी राज्य) से बिगड़ कर अंग्रेज़ी में आस्ट्रिया पड़ा।

आस्ट्रिया चार्लमैन के साम्राज्य बवेरिया राज्य का एक भाग था। यह धीरे धीरे एक बड़ा और प्रसिद्ध देश हो गया। तेरहवीं शताब्दी के अन्त में रूडाल्फ, काउन्ट आफ हैप्सबर्ग इसका उत्तराधिकारी बना उसने इसकी नींव योरुप के बढ़े चढ़े देशों में डाली। सन् १२६१ से १६१८ तक रूडाल्फ के वंशज एक के बाद दूसरे कभी हैप्सबर्ग वाले कभी जर्मनी वाले इसपर राज करते रहे।

★ आस्ट्रिया ★

हंगरी आस्ट्रिया का पड़ोसी देश है। यह वियना के नीचे डेन्यूब नदी की बड़ी घाटी में स्थित है। इसके पश्चिमी भाग को छोड़कर शेष सभी ओर से कार्पेथियन पर्वत इसे घेरे हुये है। दक्षिण की ओर आइरन गेट पर नदी एक तंग रास्ता बनाती है। इस मार्ग से होकर तुर्क सेनायें बार बार आईं और उन्होंने देश को लूटा तथा बर्बाद किया। १५२६ ई० में मोहक्स की लड़ाई में हंगरी का राजा तुर्की सेना द्वारा मारा गया। निराश होकर हंगरी ने अपने को आस्ट्रिया के हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार आस्ट्रिया-हंगरी का साम्राज्य बना। अब यह राज्य मिल जाने से बहुत शक्तिशाली होगया और अपने बैरी तुर्कों को जो वियना के समीप पहुंच चुके थे निकाल बाहर किया।

इसके बाद फिर एक बार तुर्कों ने इस साम्राज्य पर आक्रमण किया। इस समय उन्होंने सारे देश पर अधिकार जमा लिया था और वियना को घेर लिया। ऐसे आपत्ति के समय पोलैंड के राजा जान सोबस्की ने इसकी सहायता की और तुर्कों को उसी रास्ते मार भगाया जिस रास्ते से वे आये थे। यह घटना योरुप के इतिहास में बड़े महत्व की है।

इसके दो सौ साल बाद १७४० ई० में हैप्सवर्ग के चौथे चार्ल्स की मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय राजा ने अपनी लड़की मैरिया-थेरीसा के हाथ आस्ट्रिया-हंगरी और दूसरे राज्यों की बागडोर सौंप दी क्योंकि राजा के कोई पुत्र न था। राजा ने दूसरे योरुपीय राज्यों से अपना विचार प्रकट कर दिया था और कह दिया था कि वे उसकी पुत्री का अधिकार सम्हालेंगे। किन्तु मृत्यु के पश्चात सभी राजा इस बात को भूल गये और सभों ने अधिकार जमाने के विचार से राज्य को घेर लिया। किन्तु मैरियाथेरीसा ने बड़ी बहादुरी और तेज़ी दिखलाई। इसकी प्रजा ने भी देश-प्रेम का अच्छा परिचय दिया और इङ्गलैंड की सहायता से इसने अपने सभी बैरियों को मार भगाया।

नेपोलियन के समय आस्ट्रिया के भाग्य ने और दूसरे देशों की भांति फिर पलटा खाया। निचले प्रदेशों को छीनने के बाद नेपोलियन ने लम्बर्डी के प्रांत पर धावा मारा। ऐसे संकट के समय रूस और प्रशा के राजा इसकी सहायता के लिये आये। मेरेन्गो होहेनलिन्डन के युद्ध में नेपोलियन ने संयुक्त सेनाओं को परास्त किया।

★ आस्ट्रिया ★

आस्ट्रिया ने विवश होकर टायरल प्रान्त फ्रांस को दे दिया। १८०५ ई० में नेपोलियन ने वियना पर धावा मारा और आस्टर्लिट्ज़ के युद्ध में अपने बैरियों को परास्त किया। इसके चार साल बाद वागरम के स्थान पर नेपोलियन ने दूसरी विजय प्राप्त की। इस प्रकार आस्ट्रिया १८१५ ई० तक फ्रांस के अधिकार में रहा किन्तु जब सन् १८१५ ई० में वाटरलू के प्रसिद्ध युद्ध में नेपोलियन परास्त हुआ तो आस्ट्रिया फिर स्वतंत्र हो गया।

यद्यपि हंगरी ने आपत्ति काल में सदैव आस्ट्रिया की सहायता की और एक होकर बैरियों का सामना किया तो भी जोज़ेफ-फ्रांन्सिस के समय इसने स्वतंत्र होने के लिये विप्लव किया। यह बात हंगेरियन के लिये स्वाभाविक ही थी। अन्त में संधि हो गई। अपनी स्वयं पार्लियामेन्ट द्वारा इनका शासन होने लगा। जोज़ेफ़ फ्रान्सिस आस्ट्रिया का महाराजा और हंगरी का राजा बना रहा। सेना के संगठन और दूसरे राज्यों से सम्बन्ध रखने में हमेशा आस्ट्रिया और हंगरी साथ रहे।

सन् १९१४ में आस्ट्रिया की गणना उन्नतिशील शक्तिशाली राज्यों में थी। यह देश धनी और बली था। जर्मन राज्य की दोस्ती का इसे सौभाग्य प्राप्त था। इसके

पड़ोसी इसका आदर करते थे। वियना में एक सुन्दर अनुपम कचहरी थी। वियना योरुप भर में सर्वश्रेष्ठ सुखी और सजीली राजधानी थी। हंगरी खासकर घास के मैदानों, लकड़ी और अनाज के खेतों के लिये धनी माना जाता था। कार्पेथियन पर्वत के ढालों पर अंगूर के बाग शोभायमान थे। रूस के किनारे किनारे पटसन, गाँजा इत्यादि की उपज बहुत होती थी। बोहेमिया में अच्छे शुद्ध कोयले की खानें बहुत थीं। पूर्वी आस्ट्रिया में लोहा अधिकांश भाग में मिलता था। गेलेशिया, स्टोरिया और साल्ज़बर्ग में ही दूसरी धातें प्राप्त थीं। यहाँ तक कि सोना, चाँदी भी बोहेमिया और हंगरी में पाया जाता था।

सब से अच्छी बात तो यह थी कि मध्य और पूर्वी योरुप के स्थल-मार्ग अधिक लम्बाई में इसी के अधिकार में थे। डैन्यूब नदी बालकनपूर्व को जाने वाली मुख्य रेलवे लाइन इसके मध्यवर्ती भाग से जाती है जिनमें जाने वाला माल और सामान इसी देश के मध्य-वर्ती भाग से जाता था। जर्मनी, इटली, बाल्टिक और रूम सागर सभी का व्यापार इसी राज्य के मार्गों द्वारा होता था। वियना, प्रेग, बुदापेस्ट और छोटे छोटे

असंख्य नगर धनी बन गये थे और धीरे धीरे उन्नति कर रहे थे।

किन्तु इन तमाम बातों में बलिष्ठ होते हुए भी इस साम्राज्य में एक भयानक दुर्बलता मौजूद थी। जर्मन भाषा प्रयोग करने वाले राजा के अधिकार में बहुत सी जातियाँ थीं। इन जातियों के इतिहास, रीति-रिवाज और सामाजिक अवस्थाएँ सब अलग अलग थीं। यहाँ लगभग ग्यारह प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता था और प्रत्येक प्रान्त के लोग अपने प्रान्त को आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य की अपेक्षा अधिक प्रेम की दृष्टि से देखते थे।

सारे साम्राज्य की जनसंख्या का ¼ भाग आस्ट्रिया निवासी थे, यह सभी जर्मन थे। दूसरे चौथाई में हंगरी के मगायर (माजार) लोग थे। शेष दो चौथाई में सभी लोग थे। टायरल और एड्रियाटिक के किनारे डलमेशिया प्रान्त के रहने वाले इटेलियन जाति के थे। बोहेमिया का स्वयं अपना एक इतिहास ही अलग था। हंगरी के उत्तर और दक्षिण स्लैव जाति रहती थी। यहाँ चेक, सर्ब, क्रोट, बोसेनियन, स्लोवीन, पोल, रूमानियन इत्यादि सभी जातियां बसी थीं।

इन सभी जातियों पर फ्राँसिस जोज़ेफ एक जमीदार की भाँति राज्य करता था। इनमें एक दो जातियाँ ऐसी थीं जिनसे शासन भंग होने का डर था और ऐसा ही हुआ। १९१४ में साम्राज्य के दक्षिणी कोने से आपत्ति आई। उसी साल २८ जून को राज्य का उत्तराधिकारी आर्कड्यूक फ्रांसिस फर्डीनेण्ड और उसकी पत्नी बोसेनिया में सेराजिवो स्थान पर मार डाले गए। बोसे-निया बालकन प्रान्त का एक भाग था और हाल ही में साम्राज्य में मिलाया गया था।

बोसेनिया के बहुत से निवासी उसी जाति के थे जिसके सर्विया के रहने वाले थे। यह एक सर्विया के विद्यार्थी का कार्य्य था जिसने आर्क ड्यूक को सेराजिवो की गलियों में घूमते हुए गोली से मार दिया। यद्यपि सर्वियन सरकार का इस हत्या से कोई वास्ता न था तो भी झूठी खबरें फैलाकर यहां के लोगों को आस्ट्रिया के विरुद्ध काफी भड़का दिया गया था।

आस्ट्रिया के राजा ने इस बहाने सर्विया को लिखा कि जितनी भी बातें उसके विरुद्ध फैलाई गई हैं वह सब का बिलकुल खातमा करदे और जो जो अफसर आस्ट्रिया

के विरुद्ध प्रचार करने वाले हैं सभी निकाल दिये जावें। सर्बिया ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। इसपर २८ जूलाई को आस्ट्रिया-हंगरी ने सर्बिया के ऊपर युद्ध घोषित कर दिया। रूस ने सर्बिया को सहायता देनी चाही और जर्मनी ने आस्ट्रिया की सहायता करनी चाही। इसलिये दूसरी अगस्त को रूस और जर्मनी में लड़ाई छिड़ गई इसके दूसरे दिन जर्मनी ने रूस के साथी फ्रांस पर भी युद्ध छेड़ दिया। चौथी तारीख को इंगलैंड और बेल्जियम भी मैदान में कूद पड़े और इस प्रकार बड़ी लड़ाई छिड़ गई।

लड़ाई के साथ साथ साम्राज्य का अन्त हुआ और हंगरी फिर एक स्वतंत्र राज्य हो गया। चेक और स्लोवेक जातियों ने मिलकर चेकोस्लोवेकिया का राज्य बनाया जिसमें बोहेमिया भी सम्मिलित है। सर्ब, क्रोट और स्लोवीन जातियों ने मिलकर यूगोस्लेविया का राज्य स्थापित किया। उत्तर-पूर्व के प्रान्त पोलैण्ड को दे दिये गये। दक्षिण-पश्चिम का भाग रूमानिया को मिला। दक्षिणी टायरल और सभी एड्रियाटिक के तटीय प्रदेश जो आस्ट्रिया के थे इटली को मिले।

१२ नवम्बर सन् १९१८ को आस्ट्रिया का शेष

छोटा राज्य एक प्रजातंत्र राज्य बन गया। यह अब उतना ही है जितना ६०० साल पहले था। यहां की प्रजा ने ऐसे राजा से छुट्टी ली जिसने लड़ाई में डाल कर प्रजा को इतना कष्ट दिया था। यहाँ की प्रजा अब अपना सभापति चुनती है जो चार साल तक राज्य करता है।

जब लड़ाई से छुट्टी पाकर योरुप के देशों ने अपनी दशाओं का निरीक्षण किया तो आस्ट्रिया ने अपने को सबसे बुरी दशा में पाया। यहां भोजन के लिये गेहूँ हंगरी से आता था किन्तु अब वह बिल्कुल बन्द हो गया था। इसी प्रकार कोयला भी चेकोस्लोवेकिया से आना बन्द हो गया था।

आस्ट्रिया की दशा ऐसी बुरी थी कि न तो पास में भोजन था और न सामग्री। रुपया पैसा, कच्चा माल या तैयार माल कुछ भी न था। रेलवे कारखाने सभी बिलकुल बन्द पड़े थे।

आस्ट्रिया के सिक्कों का मूल्य घटता ही गया। कभी कभी तो एक रोटी के लिये दुगुना दाम देना पड़ता था। शहरों की दशा देहातों से भी बुरी थी क्योंकि कम से कम देहात में लोगों को भोजन तो मिलता ही जाता

था किन्तु शहरों में लोग भोजन-सामग्री बिना भूकों मर रहे थे। वियना के लगभग सभी लोग भूक के कारण बीमार पड़ गए और हज़ारों की संख्या में बच्चे बूढ़े मर गए।

आस्ट्रिया के पुराने बैरी अमरीका, इङ्गलैण्ड इत्यादि उसकी सहायता को आए और बड़ी बड़ी संस्थाएँ (सोसायटी आफ फ्रेन्ड्स) इत्यादि खोली गईं जिन्होंने वियना और दूसरे नगरों में भोजन और वस्त्र बांटने का कार्य किया। १६२२ ई० में राष्ट्र-संघ (लीग आफ नेशन्स) ने इंगलैण्ड, फ्रान्स, इटली और चेकोस्लोवेकिया द्वारा आस्ट्रिया को ३ करोड़ बीस लाख का कर्ज दिलाया। इस रुपये से आस्ट्रिया ने फिर अपने कारखानों तथा रोजगारों को अपना किया। इसकी दशा बहुत कुछ सुधर गई। इतने में गत वर्ष जर्मनी ने आस्ट्रिया को अपने राज्य में मिला लिया।

तीसरा अध्याय

—:o:—

आस्ट्रिया के निवासी

दुनिया के सभी देशों में यह बात देखी जाती है कि शहरी और देहाती जीवन में बहुत बड़ा अन्तर होता है किन्तु कुछ बातें ऐसी हैं जो एक राष्ट्र के बड़े बड़े शहरी और छोटे छोटे गांव के निवासी दोनों ही में समानता से पाई जाती हैं। उसी प्रकार आस्ट्रियन लोगों में भी कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिनके कारण वह और दूसरे राष्ट्रों से सुगमता से पहचाना जा सकता है। यद्यपि आस्ट्रिया के निवासी उसी जाति के हैं जिसके जर्मन लोग हैं। यह जर्मनी भाषा भी बोलते हैं तो भी उसमें कुछ खास बातें पाई जाती हैं जो उनके उत्तर-निवासी भाइयों में कदापि नहीं पाई जातीं।

यहां के निवासियों का जीवन चंचल और निश्चिन्त होता है पर वे प्रसन्नचित होते हैं। भूल जाना, सुस्ती करना, आज के कार्य को कल पर

टाल देना इत्यादि इत्यादि बातें इनमें पाई जाती हैं जो हमारे देश (भारतवर्ष) में भी अधिकता से पाई जाती हैं।

बड़े बड़े नगर वियना, ग्राज़, लिंज् और दूसरे नगर तथा छोटे से छोटे गांव और झोपड़ों में सभी जगह यह बात देखने में आवेगी कि यहां के निवासी स्वच्छता और सफाई को बहुत पसंद करते हैं। यह लोग शोभा और सुन्दरता को बहुत चाहते हैं, तथा उनका उपयोग करना भी जानते हैं। यदि देहात में कोई कार्य्य करना होता है या कुछ बनाना होता है तो काम ऐसी सफाई से किया जाता है जिससे किंचितमात्र भी भूमि की सुन्दरता और शोभा नष्ट नहीं होती। रेलवे स्टेशन, नये पुल और दूसरे बिजली के कार्य भी ऐसे ढंग से होते हैं जिससे दृश्य का कोई भी भाग खराब नहीं होता। शहर में ऐसे मकान बनाए जाते हैं जो सुन्दर और भड़कीले होते हैं।

वियना में मज़दूरों के मकान ऐसे ही बने हैं और गलियां साफ सुथरी हैं। जिस प्रकार कि हमारे देश में लालटीनें टांगी जाती हैं उसी प्रकार गमले

और फूलों की टोकरियां यहाँ टाँगी जाती हैं जिससे प्रतीत होता है कि यहाँ के देश भर के निवासी कितना फूलों के शौकीन होते हैं। जहाँ कहीं सुगमता होती है, वहाँ शहरों के भीतर भी सड़कों पर पेड़ों की कतार लगी रहती है। खुले मैदान भी बागों तथा पार्कों की भांति सुसज्जित होते हैं। ये बातें केवल बड़े नगरों में ही नहीं वरन् तमाम देश में पाई जाती है, क्योंकि यहाँ के निवासी प्राकृतिक सुन्दरता और स्वच्छता के बड़े प्रेमो होते हैं। सभी स्थानों पर सड़कें मीलों तक फलों के पेड़ों से भरी मिलती हैं। यहाँ के निवासी जितने सुन्दरता और प्राकृतिक दृश्यों के प्रेमी होते हैं उतने ही ईमानदार और मितव्ययी भी होते हैं।

शहर और देहात दोनों जगहों में लोग नाच और गान विद्या के बड़े शौक़ीन होते हैं। वियना, साल्सबर्ग इत्यादि बड़े नगरों में धुरन्धर गवइयों के मकान हैं और बड़े बड़े गाने के त्योहार मनाए जाते हैं। प्रत्येक शहर, गाँव, घर तथा सराय में गाना, बजाना, खेलना और कूदना दैनिक दिल बहलाव के कार्य्य हैं।

यहाँ के निवासियों की खूबियां देहात में पाई जाती

हैं, क्योंकि वहाँ पर बाहरी बातों का प्रभाव देर में पड़ता है। यहाँ के लोग हँसमुख, मित्र प्रकृति वाले, दयालु और प्रसन्नचित्त होते हैं। यह लोग बड़े सीधे सादे होते हैं, सलाम बन्दगी करना तो इनकी आदत है। अतिथ सत्कार करने में यह लोग बड़े ही चतुर तथा उत्सुक होते हैं। इनकी उत्सुकता अजनबी के साथ बातचीत करने और उनके सत्कार करने में आश्चर्य जनक होती है किन्तु ये सभी बातें वे किसी लालचवश नहीं करते वरन् वे इन बातों के आदी होते हैं।

आस्ट्रिया के घूमने वाले दो प्रकार के लोग होते हैं एक तो अधिक खर्च करके घूमने वाले और दूसरे सस्ते घूमने वाले। पहले के लोगों में खास कर अंग्रेज़ और अमरीकन हैं। ये लोग अच्छी से अच्छी रेलगाड़ी और मोटर आदि पर यात्रा करते हैं और बड़े बड़े होटलों में ठहरते हैं, जहां पर लग-भग सभी उनके देशवासी होते हैं। ये कदाचित् ही कभी आस्ट्रिया के प्राकृतिक जीवन को देखते हों। दूसरे और राष्ट्रों के लोग होते हैं। उनमें खास कर जर्मन होते हैं जो मजबूरी होने पर ही तीसरे दर्जे पर यात्रा करते हैं। लगभग उनकी तमाम

यात्रा पैदल ही होती है। यह लोग गाँव की सरायों में रहते हैं। शीतकाल में लोग अधिक मात्रा में आते हैं यह लोग स्केटिंग (बर्फ पर फिसलना) के लिये आते हैं। ऐसे यात्रियों की मात्रा दिन प्रतिदिन अधिक होती जा रही है।

दूसरे प्रकार के यात्री ही आस्ट्रिया निवासियों को भली भांति जान सकते हैं गर्मियों में यह लोग कमीज़ और जांघिया पहने, नंगे सर पैरों में बड़ी बड़ी कीलों वाला जूता पहने और अपना सामान एक बोरे में लिये पीठ पर लादे तमाम इधर उधर दिखलाई पड़ेंगे। जर्मन लोग ऐसी छुट्टियों का मूल्य अंग्रेजों की अपेक्षा कहीं अधिक जानते हैं। पड़ोस राष्ट्रों के रहने वाले ही यहाँ की पैदल यात्रा के सुख को जानते हैं। आस्ट्रिया के निवासियों के लिये सभी यात्री बराबर हैं, वही सद्व्यवहार का भाव, सभ्यता और अतिथि सत्कार सब के लिये है।

यहाँ के लोग बड़े भक्त, वीर और योद्धा होते हैं। ये अच्छाइयाँ इनमें यहां के प्राकृतिक प्रदेश के कारण है। यह लोग बहुत समय से पहाड़ी जगह पर बसे हैं जहाँ का जीवन कठिन है और साल के अधिकांश दिनों

में रहने योग्य नहीं है। अच्छाइयों के साथ साथ बुराइयां भी है। सभी स्थानों की भांति यहां भी सीधे सादे मनुष्यों में गुस्सा जल्दी आ जाता है। थोड़े बेईमान और बदमाश लोग भी हैं। यहां के ग़रीब किसान स्वतंत्र, मितव्ययी और कठिन परिश्रम करने वाले हैं। यह लोग प्रान्तीय घमण्ड से भरे और हुक्म को मानने वाले होते हैं। इसकी मिसाल प्रान्तों के अजायब घरों में मिलती है जहां पर उनके प्राचीन इतिहास सुरक्षित हैं। यहां पर गाँव में आपस में दोस्ताने तौर पर बहुधा खेल, कूद, गाना, नाचना, हाथ के काम और दूसरी बातों में मुक़ाबला होता रहता है जो बहुत ही सुहावना लगता है।

किसी भी देश के निवासी के बारे में जानने के लिये उसके पेशे का ज्ञान आवश्यक है। लिन्ज़, ग्राज़, क्लाजेनफर्ट, स्टेर आदि नगरों में हज़ारों की संख्या में मज़दूर कारखानों में और दूसरे देशों की भांति काम करते हैं। स्टीरिया में लोहा और भूरे रंग का कोयला मिलता है। साल्ज़बर्ग और हाल में नमक खानों से निकाला जाता है।

वियना में थोड़े से बड़े बड़े कारखाने हैं। किन्तु यहाँ की जन-संख्या का अधिकांश भाग छोटे छोटे

व्यापारियों का है जो दूसरे देशों से व्यापार करते हैं। यहां पर बड़े बड़े व्यापारिक बैंक हैं। इन घरों का कार्य्य बड़ी चतुरता से होता है जिसके कारण इनका नाम योरुप में प्रसिद्ध है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होने के कारण यहाँ के लोग कई भाषाओं के जानने वाले होते हैं। बड़ी लड़ाई के बाद से यहाँ पर एक मुख्य उन्नति यह हुई है कि यहां के रहने वालों को वियना से बिना तार के तार के द्वारा प्रतिदिन अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। दिन प्रतिदिन अँग्रेज़ी पढ़ने का रिवाज बढ़ता जा रहा है।

समुद्र से दूर होने के कारण यहां से बहुत वज़नी सामान आसानी से नहीं भेजा जा सकता। यहां पर बहुत बड़े कारखाने भी नहीं हैं इसीलिये इञ्जीनियरिंग बड़ी मात्रा में नहीं है। पर यहां वाले सुन्दर सामान तयार करते हैं, जिसमें वे अपनी कला-कौशल का अच्छा परिचय देते हैं। टायरल में जो चमड़ा बनाया जाता है। उससे हैण्डबैग और दूसरे भड़कीले सामान बनते हैं। यहां पर सिल्क (रेशम) के काफ़ी कारखाने हैं, और बहुत अच्छे अच्छे हीरे जवाहिरात के कार्य्य करने वाले

कारीगर हैं। हाथ की कारीगरी का काम सारे आस्ट्रिया में होता है, चाहे वह वियना का रहने वाला हो और चाहे वह गांव का रहने वाला हो।

आस्ट्रिया में सैनिक संगठन १९१४ के पहले ऐसा था कि जीवन में एक बार प्रत्येक आस्ट्रिया निवासी को उसमें घुसना पड़ता था। किन्तु बड़ी लड़ाई के बाद रोक लगा दी गई कि यहाँ ३० हज़ार से अधिक सेना न होनी चाहिये। यहाँ लोग छुट्टियाँ केवल शिकार में ही व्यतीत करते थे किन्तु आज उन्हें हथियार रखने का भी अधिकार नहीं तो भी यहां के राजनैतिक क्षेत्रों में ऐसा मालूम पड़ता है कि वह अपने हथियार रखना चाहते हैं जिससे यहाँ की सरकार को खतरा सा रहता है।

शहरों से बाहर खेती और लकड़ी के दो मुख्य धंधे हैं। पहाड़ी प्रदेश में लोग ढोर पालने, दूध, पनीर तथा मक्खन का रोज़गार करते हैं। सवेरे से संध्या तक उसका कार्य्य बड़ा ही कठिन होता है। बसन्त, ग्रीष्म और बरसात में गायें पहाड़ों और ऊँचे स्थानों पर रहती हैं। वहाँ उनके दूध से मक्खन और पनीर बनाया जाता है। यहाँ पर इन्हीं दिनों घास इकट्ठी कर

रख दी जाती है। भेड़ बकरियां और सुअर बर्फीले स्थानों के नीचे पाले जाते हैं।

यहाँ छोटे छोटे किसान हैं जो खेत का लगान देने के बाद स्वयं अपने सामान के मालिक होते हैं। खेती से उनका जीवन चलता है। यहाँ के लोग मज़दूर नहीं रख सकते इसलिये घर के प्रत्येक व्यक्ति को कार्य करना पड़ता है। फसल तैयार होने पर खेतों में लड़कियों और औरतों की अधिकता रहती है। क्योंकि मर्द लोग ऐसे समय में जंगलों में काम करते रहते हैं या और किसी दूसरे धंधे या नौकरी पर रहते हैं। घर के सभी लोग खेतों में अनाज काटते या खलिहान में दिखाई पड़ेंगे। लकड़ी के सूखे खम्भों पर रख कर घास सुखाई जाती है। स्त्रियाँ काले और नीले वस्त्र धारण किये रहती हैं। उनकी हैट पीली चमकीली घास की बनी होती है। यह औरतें कठिन से कठिन पहाड़ी रास्तों को जल्द अकेली साफ कर डालती हैं। यहाँ काटते, खलिहान लगाते, ढोते, झाड़ते समय सदा एक प्रकार का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है।

लड़कों की भाँति लड़कियाँ भी काम करती हैं।

ऊँचे पहाड़ी चरागाहों पर गायें केवल इन्हीं के भरोसे रहती हैं। छोटी लड़कियाँ अपने भाइयों की सहायता करती हैं और भेड़ों तथा सुअर के बच्चों को चराती हैं। यहाँ का एक अनुपम दृश्य नहीं भुलाया जा सकता जब छोटी लड़कियाँ बालों में फूल गूँधे दो बैलों के बीच में धीरे धीरे घरों को खेतों से आती हैं। आस्ट्रिया में घोड़ों से बैल अधिक हैं। यद्यपि यह घोड़ों की अपेक्षा सुस्त होते हैं किन्तु इनमें बहुत बल होता है और देख-भाल भी कम करनी पड़ती है।

अनोखे स्थान में पैदा होने के कारण यहाँ के मनुष्य भी अनोखे होते हैं। ये सभी चाहे जैसी दशा में हों गाना बजाना बहुत पसन्द करते हैं। यहाँ के लोगों का गाना बजाना तो नित्य का कार्य है। यहाँ के लोग मूर्ति-पूजने वाले और पुराने विचार के भी हैं। इन लोगों का बिश्वास है कि यदि वह धार्मिक और भक्त होंगे तो वे भूत-पिशाच आदि से बचे रहेंगे।

यहाँ धर्म के विषय में देहात और शहर के लोगों में बहुत भिन्नता है। यहाँ ६० प्रतिशत रोमन कैथलिक और १० प्रतिशत प्रोटेस्टेंट हैं। धर्म की बात देहात वालों के लिये दैनिक काम है। इनके लिये रविवार कोई खास

दिन नहीं वरन सभी दिन बराबर हैं। घाटियों, पहाड़ियों और चरागाहों पर बहुत बड़ी मात्रा में छोटे छोटे चर्च (गिरजे) बने हैं जो यहाँ के दृश्य को और भी सुन्दर बना देते हैं। यहाँ पर बहुत से मक़बरे और ईसा के सूली पर चढ़ने वाले घर बने हैं। क्रास ग्लाकनर जो कि सर्वश्रेष्ठ चोटी है वहाँ एक बहुत बड़ा क्रास है। संध्या समय लोग इन स्थानों पर जाते हैं, और जंगली फूल पत्तियों की भेंट चढ़ाते हैं। वह लोग जो धार्मिक स्थानों तक नहीं पहुँच सकते रास्ते में ही रुक जाते हैं और प्रार्थना कर लेते हैं। बहुधा जहाँ पर कोई व्यक्ति मर जाता है वहीं पर मक़बरा बना दिया जाता है जिससे वहाँ के आने जाने वाले उस मरे हुए के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें। ऐसे छोटे छोटे क्रास एक भयभीत नदी के किनारे और जंगल में हैं। जंगल में बहुधा बिजली गिरने तथा पेड़ फट जाने का डर रहता है। लकड़िहारों का यह जीवन बहुत ही संकटमय रहता है।

जब संध्या समय टायरल में चर्च की घंटी बजती है तो लोग संध्या गान के लिये चलते हैं। रंग बिरंगे चर्च, गुम्बद और फिर उस पर देहाती दृश्य सोने पर सुहागे का

काम करते हैं। ये दृश्य यहाँ के ऐसे होते हैं जो भुलाये नहीं जा सकते। कहा जाता है कि यह चर्च के घंटे एक बार ईश्वरीय कृपा से आस्ट्रिया के लिये बड़े उपयोगी सिद्ध हुये। १७६७ ई० में नेपोलियन ने यहाँ अचानक धावा मारना चाहा। किन्तु एक दिन ईस्टर को संध्या समय जब यह घंटे तमाम ओरलबर्ग में बजने लगे तो फ्रांसीसियों ने सोचा कि कदाचित यह घंटे सेना एकत्रित करने के लिये बज रहे हैं। उनको भय मालूम हुआ और वे स्विट्ज़रलैण्ड को लौट गये।

आस्ट्रिया के गांवों में पादरी और सराय के मालिक एक से होते हैं। यह लोग झोला-मोला पैर के नीचे जमीन तक लटकता हुआ कपड़ा पहनते हैं। और जब कोई उनके पास से जाता है तो वह इस बात की आशा करते हैं कि रास्ते के चलने वाले उसे सर झुकाएं।

सस्ती पत्रिकाएँ, मोटर और बेतार के तार होने के कारण प्रत्येक गांव के निवासी दुनिया के सभी भागों की दशा से परिचित होता रहता है। अल्प्स के रहने वालों के जीवन में कोई विशेष अन्तर नहीं हैं। वे अब भी वही पुराने ढंग के हैं। बहुत से घरों में यहाँ के साल के दिनों का नाम किसी न किसी बड़े सन्त के

नाम पर होता है यहाँ के निवासियों के लिये यह साधु बड़े सच्चे होते हैं। यह लोग इनकी तसवीर चमकीले रंगों से दीवाल पर बनाते हैं। इनमें कुछ मुख्य यह हैं, जैसे सेंट क्रिस्टोफर ईसा मसीह को कंधे पर लिये हुए, सेंट कैथरीन पहिये के ऊपर और सेंट लारेंस लोहे की अंगीठी लिये हुए।

जिस प्रकार भारत वर्ष में देवी-देवता, ऋषी-मुनी माने जाते हैं वैसे ही यहाँ भी सेन्ट (साधू) माने जाते हैं। यहाँ पर प्रत्येक रोग को दूर करने और मनुष्य का जीवन सुरक्षित रखने के लिये 'सेन्ट' हैं। इस प्रकार जब दाँत के दर्द में सेन्ट वारवारा की सहायता ली जाती है क्योंकि उनके दांत गरम लाल जम्बूरे से खींचे गये थे। सेन्ट राचस जो तेल में जलाया गया था उसकी भक्ति जले हुए को अच्छा होने के लिये की जाती है। सेन्ट फ्लोरियन अग्नि से बचाता है क्योंकि कहीं कहीं उसकी तसवीर कुएँ पर एक बर्तन लिये बनी हैं। सेन्ट क्रिस्टोफर तमाम कठिनाइयों को दूर करते हैं। पहाड़ों पर चरागाहों में जब कभी कोई आपत्ति गायों पर आती है तो लड़कियां सेन्ट बर्थलेमिप् का नाम लेकर पुकारती हैं। प्लेग इत्यादि बीमारी के लिये सेन्ट मामनस हैं। अंगूरों की रखवाली के लिये सेन्ट अरवन हैं।

आस्ट्रिया के देहात में बिना दंड-प्रणाम के निकलना मुश्किल है। सभी बाल बच्चे, जवान बूढ़े प्रणाम करते हैं और कभी कभी तो इसी में दिन व्यतीत कर देते हैं। जहाँ पर जर्मन भाषा का प्रयोग है वहाँ साधारतः ईश्वर कल्याण करे ("ग्रस गाट") कह नमस्कार करते हैं। स्त्रियों का नमस्कार "ईसा मसीह की प्रार्थना हो" है और इसका उत्तर "सदैव, आदि से अन्त तक" होता है।

अल्प्स में रहने वाले, उन पर चढ़ने वाले और छुट्टी मानने वाले सभी पहाड़ी नमस्कार (बर्ग हेल) करते हैं उनका नमस्कार ऐसा नहीं होता जैसा हमारे यहाँ होता है। वे जब एक दूसरे के समीप या दूर से आते जाते हैं तो जोरों से पुकार कर नमस्कार करते हैं। यह आवाज उनकी घाटी के दूसरी ओर भी सुनाई पड़ती है। नमस्कार और प्रणाम करने की इतनी उत्सुकता जो यहाँ के लोगों में होती है, उससे साफ मालूम होता है कि यहाँ के लोग कैसे अतिथि-प्रेमी और भोले होते हैं।

चौथा अध्याय

—:०:—

रीति-रिवाज और रहन-सहन

योरुप में आस्ट्रिया ही एक ऐसा देश है, जहाँ पुराने रीत-रिवाज और अन्ध विश्वास अभी तक प्रचलित हैं। कुछ वर्षों पहले तो यहां की सामाजिक दशा शोचनीय थी, किन्तु अब पहले से अच्छा है, और इसकी गणना दुनिया के सभ्य देशों के साथ हो रही है। फिर भी मालूम होता है कि अभी कदाचित् उसको बातों को हटाने में पच्चीस वर्ष लग जावेंगे। तब कहीं जाकर इसे पुरानी बातों और रस्मों से छुट्टी मिलेगी।

घरेलू किस्से कहानियां कहावतें और भिन्न प्रकार के रीत व रिवाज यहां बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। ये बातें उन अलग अलग जातियों के चिन्ह स्वरूप हैं जो यहाँ के पर्वतीय प्रदेशों में आकर टिकीं। इसी प्रकार यहाँ के वेष में भी भिन्नता तथा अधिकता है। इट्रोसन, रहेशियन, ट्यूटन, रोमन, इटैलियन, फ्रैंच आदि जातियां ऐसी है, जो कुछ न कुछ मात्रा में यहां है, और उनके रीत-रिवाज तथा वेष भी प्रचलित हैं।

जिन रिवाजों का सम्बन्ध जीविका के धंधों से था वे अधिक मात्रा में प्रचलित थीं। सर्वसाधारण में यह विश्वास है कि अच्छी और खराब दो प्रकार की देवियां हैं जो अनाज और फसल पर प्रभाव डालने वाली हैं, उनका नाम पर्चटन है। सुन्दर लड़कियां सुन्दर पर्चटन के प्रभाव के लिये जमने और पकने के समय सुन्दर भेष में साल्स और टायरल प्रदेशों में अब तक खेतों में नाच गान करती हैं। बुरा प्रभाव डालने वाली पर्चटन के लिये एपीफनी में पादरी लोग जानवरों को बरदान देते हैं और बारहवीं रात के समय युवकों का समूह भेड़ की खाल पहने, अपना मुँह भयानक बनाए लाठियां लेकर खेतों में रात के समय दौड़ते कूदते और गुल गपाड़ा मचाते हैं। इन्सबर्ग, ब्रेजेन्ज़, ग्राज़ और साल्स आदि नगरों में लकड़ी के ऊपर भयानक तसवीरें बनी अजायब घरों में रक्खी हैं। यह तस्वीरें भयानक जंगली जानवरों और राक्षसों की हैं।

पहाड़ी प्रदेशों में अब तक जो जानवर पहाड़ों पर चरने जाते हैं और जब लौटते हैं तो त्योहार मनाया जाता है। बसन्त ऋतु में गाँव के चारों ओर की भूमि की रक्षा की जाती है जिस से वहां घास उग सके और

जाड़े में काम दे। गर्मी के आरम्भ होते ही जानवर पहाड़ी प्रदेशों में ले जाए जाते हैं। वह लड़कियां झोपड़े बना कर रहती हैं। जब बरफ पड़ने लगती है तो वह फिर लौट आती हैं।

जिस दिन ऊँचे पहाड़ी घास के मैदानों के जाने की तैयारी होती है तो बड़ी चहल पहल होती है। चार महीने के लिये सामान इकट्ठा करना होता है। मक्खन तयार करने के लिये बर्तन एकट्ठे करने पड़ते हैं। गायों के समूह के आगे आगे एक लड़की मामूली फ्राग पहने नंगे सर जाती है। लौटते समय यह उत्साह और अधिक समारोह के साथ मनाया जाता है। जितने जानवर होते हैं सभी के सींग पत्तियों और फूलों से सुसज्जित होते हैं। एक सुन्दर बड़ी गाय जो समूह की अगुवा होती है। जिसका गला और तमाम बदन फूलों के हारों से सुसज्जित होता है। गले में एक घंटा भी होता है। एक लड़की फूलों का हार पहने और हाथों में फूलों का हार तथा पत्तियाँ लिये आगे आगे अगुवा गाय के साथ चलती है। इस सुसज्जित बारात की अगुवानी के लिये गाँव के लोग गांव के बाहर आ जाते हैं। इन लोगों को घंटों के शब्द
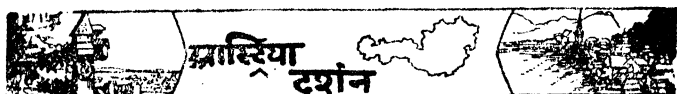
ध्वनि से पहले ही पता चल जाता है, कि गायों का समूह आ रहा है। यह रात बड़ी प्रसन्नता के साथ गाने बजाने में कटती है। इस प्रकार सुरक्षित घर लौटने का त्योहार मनाया जाता है।

यहां भी और देशों की तरह बड़े दिन का त्योहार मनाया जाता है। कुछ स्थानों में पिता अपने घर वालों को कुछ न कुछ पुरस्कार देता है। एक मेज़ पर फूलों के कुछ ढेर लगा दिये जाते हैं और उनमें पुरस्कार भी छिपा दिये जाते हैं। जब सब एकत्रित हो जाते हैं तो नाच-गान होता है। नाच गान के पश्चात् हर एक अपने भाग्यानुसार पुरस्कार चुन लेता है।

टायरल प्रान्त की बड़े दिन की रोटियां बड़ी और स्वादिष्ट होती हैं। इन रोटियों में भांति भांति के मेवे भर दिये जाते हैं।

कुछ स्थानों में यह रीति है कि प्रत्येक घर से एक रोटी गांव के किसी प्रतिष्ठित पुरुष के पास किसी छोटे लड़के द्वारा भेजी जाती है। साधारणतः गांव का पादरी ही सब से अधिक मात्रा में रोटियां पाता है। वह पहले क्रास का चिन्ह रोटी पर बनाता है, फिर टुकड़ा काटता है। किन्तु अगर रोटी घर के बड़ी लड़की की बनाई

हुई होती है, जिसका ब्याह होने वाला होता है, तो उस रोटी को वही काटता है, जो उस का प्रेमी होता है।

बोरलवर्ग में शादी होते समय यह प्रथा थी, कि ब्याह की रात को बर को लड़की के घर आधी रात को शराब लेकर जाना पड़ता था। लड़की बर की प्रतीक्षा में एक दिया जलाकर खिड़की पर रख देती थी। जब बर घर के अन्दर लड़की के पास पहुंच जाता था तो उसका विरोधी प्रेमी घर के दरवाज़े पर आता था, और वर को बुरा भला कह कर मज़बूत करता था कि वह उससे अपनी प्रेमिका के लिये लड़े।

ब्याह अब भी एक बहुत बड़ा आनन्द मनाने का अवसर होता है किन्तु पहले यहां यह रिवाज था कि जिसके घर में शादी होती थी, वह कम से कम अस्सी नब्बे आदमियों को निमंत्रित करता था। गाँव वालों का वह दिन और रात बिल्कुल बेकार जाता था। संध्या को एक सुसज्जित बारात चर्च को जाती थी। बारात के आगे कुछ गवइयों का समूह और पादड़ी चलते थे। दूल्हन साथ उसकी अविवाहिता सखियाँ बत्तियाँ लेकर चलती थीं। यह कहा जाता था कि जिसकी बत्ती कम

जलती थी, उसका ब्याह साल भर में नहीं होने वाला होता था। शादी होने के बाद लोग भोजन करते थे, और गाना बजाना होता था और इस प्रकार सारी रात व्यतीत कर दी जाती है।

ब्याह ऐसे उत्सवों में लोग अपना राष्ट्रीय भेष धारण करते हैं। यह भेष बहुधा घाटियों में रविवार को देखा जा सकता है। मनुष्यों का वेष स्त्रियों से अधिक भड़कीला होता है। लाल, नीले या काले रङ्ग का कोट होता है, जिसमें गोट लगे होते हैं। यह कोट चमकीले पालिशदार बटनों से सजाया रहता है। यह कोट सामने की ओर खुला रहता है। कोट के नीचे एक चमकीला लाल रङ्ग वेस्टकोट होता है। सुन्दर बन्द इसके ऊपर होते हैं जो काले ब्रीच को भी कसे रहते हैं। पैरों में ब्रीचों के नीचे श्वेत ऊनी मोजे होते हैं। बन्द हरे चमकदार और वेल बूटेदार होते हैं। पेटी बहुत ही सुंदर होती है, यह ६ इंच या इससे भी अधिक चौड़ी होती है। इसमें भांति भांति के वेल बूटे होते हैं, और इसपर मालिक का नाम और तारीख खुदी होती है।

स्त्रियों का ऐतिहासिक भेष दैनिक भेष से कुछ अलग होता है। यह श्वेत मोज़े पहनती हैं। इनकी

काली कुर्ती कमर पर चुनावदार होती है। उसके ऊपर चुलिया होती है जो सुंदर फीतों से बँधी होती है। उसके ऊपर कोट होता है जिसकी आस्तीन पादरियों की सी होती है। सब के ऊपर कोई रंगीन रुमाल या शाल रहती है। घरेलू भेष में स्त्रियां कपड़ों के ऊपर एक दूसरा कपड़ा (एप्रान) पहने रहती हैं। स्त्रियों को हैट अनोखी होती है, उसके किनारे बहुत चौड़े होते हैं। उनमें बंद होते हैं और काले कौव्वे के पङ्ख लगे रहते हैं। यह हैट कई भांति के होते हैं। फेल्ट के हैटों के किनारे बड़े चौड़े होते हैं और वे एक गोले बर्तन की भांति होते हैं। किसी किसी में किनारा बिलकुल ही नहीं होता। कोई कोई शहद की मक्खी के छत्तों की तरह होते हैं। कुछ हैट ऐसे होते हैं जिनपर सुनहरा बेल-बूटे का काम होता है और सुन्दर फ़ीते लगे होते हैं, जो कमर तक लटकते रहते हैं। कुछ काले हैट और कपड़े होते हैं जो दुख के समय पहने जाते हैं।

यहाँ की स्त्रियाँ और पुरुष दोनों ही चाँदी और दूसरे धातों के बने बकसुए काम में लाते हैं। यह बकसुए जूतों और पेटियों में पहने जाते हैं। स्त्री और

पुरुष दोनों ही पेटियाँ पहनते हैं। आजकल पेटी के स्थान के बजाय सीने के समीप यह पहनी जाती है और इसमें कुंजियों के गुच्छे और चाकू लटकाये रहते हैं।

यहाँ का दैनिक भेष कदाचित् ही राष्ट्रीय वेष से कम भड़कीला होता है। जब बरफ पड़ती है तो यहाँ के लोग दूसरे देशों की भाँति वेष धारण करते हैं।

बसंत से पतझड़ तक प्रत्येक व्यक्ति जांघिया पहिनता है। जूते लम्बे पहिने जाते हैं जो फीते या बटन द्वारा कसे रहते हैं। जांघिये रंगीन होते हैं। छोटा कोट भी रंगीन होता है। कपड़ों के ऊपर एक और कपड़ा होता है जो वर्षा से लोगों को बचाता है। घुटनों से एड़ी तक एक प्रकार का मोज़ा पहना जाता है जो सफेद ऊन का बना होता है और जिसपर लाल, हरे या नीले धब्बे होते हैं। पैर में भी एक कपड़ा होता है। हैटों के फीते कमरबंद से बँधे होते हैं। टोपी के अन्दर सुंदर चिड़ियों के पंख होते हैं और पुष्प भी लगे रहते हैं।

यहाँ का पादरी गाँव के मुखिया की सहायता से गाँव का राज्य करता है। मुखिया का सन्मान लोग बहुत करते हैं। इसलिये कि वह गाँव का अगुवा है। पादरी का घर सामाजिक और व्यापारिक केन्द्र सा

होता है। इसके घर में प्रतिदिन गाँव के मुख्य गण आते हैं और अपनी तथा गाँव सम्बन्धी चर्चा करते हैं। इसी घर के सब से सुन्दर कमरे में शादी, ईसाई-संस्कार और अर्थी-संस्कार के पश्चात् वाली दावतें होती हैं।

यहां के गाँवों के स्कूल बहुधा गिरजा घर या सराय के समीप होते हैं। गर्मियों में साढ़े सात बजे बालक और बालिकायें स्कूल के दर्वाज़े से सड़क पर आते जाते दिखाई पड़ते हैं। उनमें शायद ही किसी के पैर में जूते या मोज़े हों। इनमें से कुछ लड़के टोप दिये रहते हैं। सभी लड़कियों के बाल सुन्दर गुँथे हुये होते हैं और लड़के केवल जाँघिया और कमीज़ पहनते हैं। वे अपनी पीठों पर बोरे तह किये हुये लिये रहते हैं। किसी किसी के सर पर एक बड़ा कच्चे चमड़े का संदूक होता है जिसमें एक डोरी से लटकता हुआ स्पञ्ज दिखाई पड़ता रहता है।

इनमें से कुछ बच्चे तो चार पाँच मील चलकर बाहर खेतों से आते हैं और कुछ जङ्गल से भी आते हैं। ये बालक अँग्रेज़ी सिक्के अधिक पसन्द करते हैं।

क्योंकि इनके यहाँ के सिक्के ग्रास्चेन (१०० ग्रास्चेन = १ शिलिंग) बहुत छोटे होते हैं।

यहाँ मकानों का फ़र्श साधारणतः पत्थर का होता है किन्तु और सारा मकान लकड़ी का बना होता है। दीवालों पर पटनई धन्नियों की होती है। खिड़कियों में हरी और नीली चिकें लगी रहती हैं। खिड़कियों के नीचे और ऊपर सुन्दर चमकीले तसवीरें बनी होती हैं। छतें ढालू होती हैं, इनकी ओरियाँ चारों ओर निकली रहती हैं। छत पर लार्च लकड़ी के तख़्तों और पत्थर की पाटन रहती है। मकान तीन तल्ले के होते हैं। ख़ास ख़ास कमरे बीच के तल्ले में होते हैं। नीचे के तल्ले में जानवर रहते हैं और सामान रक्खा जाता है। दीवाल, छत, सभी वस्तुयें लकड़ी की बनी होती हैं। घर के बाहर एक बग़ीचा होता है। मकान गर्म करने के लिये स्टोव जलाया जाता है। बड़ों के सोने और रहने के कमरे छोटों से अलग होते हैं।

घर के बाहर की ओर एक छोटा बग़ीचा होता है। छतों पर और इधर उधर तमाम लता और पुष्प होते हैं।

देश दर्शन

आस्ट्रिया वालों के खेल कूद

आस्ट्रिया वालों के दिल बहलाव का मुख्य साधन गाना और बजाना ही है। यद्यपि सभी लोग साल्जबर्ग और वियना के नौटंकी और नाटकों में नहीं जा सकते जहां हजारों की संख्या में मनुष्य जाते हैं किन्तु फिर भी प्रत्येक घर में एक न एक अच्छा गाने बजाने वाला अवश्य होता है। छोटे छोटे शहरों और कस्बों में भी संगीत समितियां उनके जीवन के एक अंग हैं। देहात में लड़के और लड़कियां खेतों में काम करते और जानवरों को चराते समय गाते मिलेंगे। सरायों में प्रतिदिन सन्ध्या समय गाना होता है। उजाड़ मार्ग से जहाँ कोई वस्तु नहीं, वह भी गाने बजाने की ध्वनि से भरा रहता है।

गाने की भाँति नाचना भी उनके समय व्यतीत करने का एक अच्छा साधन है। जोहन स्ट्रास और उसके साथियों के कारण यहाँ का नाच-गाना (वाल्ज) सारी दुनियाँ में प्रसिद्ध था। अब भी यह आस्ट्रिया में उसी

उत्साह के साथ प्रचलित है जैसे कि यह पिछली शताब्दी के .८५ में था। देहात में कहीं कहीं अब भो वही पुराने ढंग का नाच होता है। वे लोग इधर उधर उछलते-कूदते, एंठते और मुकड़ते हैं। कहीं कहीं पर अर्द्धाकार गोले में ल.ग खड़े होकर नाचते, गाते और खेल-कूद करते हैं। जब अधिक मस्ती आ जाती है तो लोग सीटियाँ बजाने और जाँघों के बल फिसलने लगते हैं।

टायरल के उतरी प्रान्त में लोग जब त्यौहार मनाते हैं तो बड़ी खुशी मनाई जाती है। मुख्य मुख्य गलियों में इस पार से उस पार डोरियों में रंगीन घंटीदार बत्तियाँ लगी हुई रहती हैं। और गलियों में सुन्दर रंग बिरंगे कपड़े पहने हुये लोगों का हँसता हुआ समूह होता है। कोई भी व्यक्ति ऐसे समय अजनबी नहीं माना जा सकता। नौ बजे के लगभग बाजा बजाने वाले सुन्दर वस्त्र पहने सुसज्जित आते हैं और सड़क पर एक ओर खड़े हो जाते हैं। इनके दोनों ओर मनुष्यों की भीड़ रहती है। इसके एक या डेढ़ घंटे के बाद सभी लोग एक जलूस में बड़ी सराय की ओर जाते हैं और सर्व श्रेष्ठ सुसज्जित कमरे में बैठते हैं। यहाँ बड़े उत्साह के साथ रात भर गाना बजाना होता है।

सन् १६१४ की बड़ी लड़ाई के बाद फुटबाल समिति के लिये बड़ा उत्साह दिखाया गया। यह खेल अभी केवल शहरों में होता है। और भी जितने प्रकार के खेल हैं सभी की उन्नति हो रही है।

यहाँ के लोग छोटे जङ्गली जानवरों और चिड़ियों का शिकार करते हैं। किन्तु यहाँ के लोगों का सब से सुन्दर और प्रिय शिकार साँभर है। इसका शिकार खेलते खेलते यहाँ के निवासी अच्छे निशाना लगाने वाले हो गये हैं। स्टीरिया, टायरल, साल्ज़बर्ग के लोगों का छुट्टी का समय ऐसे ही कार्यों में व्यतीत होता है। वे लड़कपन से ही छिपने, दौड़ने, चढ़ने और कूदने के आदी होते हैं। इस लिये इनको इस कार्य में काफी आनन्द आता है।

यहाँ साँभर को लोग पहाड़ी बकरी कहते हैं। यह एक प्रकार का सींग वाला हिरन है। यह बड़ा जंगली होता है और ऊँचे पहाड़ों पर रहता है। यह बड़ा ही चतुर, फुर्तीला और शर्मीला होता है। इसके पीठ पर कुछ लम्बे काले चमकीले बाल होते हैं। इनका सिर कुछ कुछ श्वेत और नीला होता है। शिकारी लोगों को

इन बालों पर बड़ा घमंड होता है, वे इसे अपने टोपों में बड़ी शान से लगाते हैं। मृगा और मृगी दोनों के दो दो छोटे सींग होते हैं। यह सींग ऊपर की ओर नुकीले होते हैं। यह आस्ट्रिया के देहातों में बहुत हैं और जहाँ कहीं भी ध्यान से देखा जाय यह दर्जन के दर्जन सरायों, खेतों के घरों की दीवालों पर दिखाई पड़ेंगे।

सांभर का पीछा करने के लिये बड़ी चतुरता और सहनशीलता की आवश्यकता पड़ती है। पहाड़ों पर कई घंटे की कठिन चढ़ाई के पश्चात् जब शिकारी थक कर शिथिल हो जाता है तो उसको एक मिनट की शिथिलता उसकी सारी आशाओं पर पानी फेर देती है। साँभरों का समूह जिसके पीछे शिकारी लगा हुआ है क्षणमात्र में ही भाग निकलता है। शिकारी बेचारा खड़ा ताकता का ताकता रह जाता है। इस भगदड़ का दृश्य ही उसे पारितोषिक रूप में मिलता है। ये सांभर पलक मारते ही फुर्ती के साथ एक दिशा से दूसरी ओर आँखों से ओझल हो जाते हैं। आस्ट्रिया में शिकार की बड़ी पवित्र प्रतिष्ठा है और इसका ध्येय भी उच्च है। मनुष्य और जानवर दोनों का मान बराबर है। शिकारी को प्रत्येक जीव की हिंसा के बदले कुछ देना पड़ता है।

और यदि घायल जानवर छूट गया तो और अधिक देना पड़ता है।

सांभर आखेट कितना दुर्गम और खतरनाक है यह हम लोगों को महाराजा मैक्समिलियन की एक कहानी से भली भाँति प्रकट हो जाता है। "एक बार मैक्समिलियन ने एक आखेट का पीछा किया और मार्टिनस्वन्ड पर पहुंचा। राजा शिकार के पीछे ऐसा मग्न था कि उसे सारी सुध बुध भूल गई और वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ से चढ़ना या उतरना दोनों असम्भव था। यद्यपि राजा अपने को स्थान पर पाकर घबराया नहीं तथापि उसकी दशा ऐसी थी कि वह कुछ कर न सका। असहाय वह चट्टान के दर्रे में खड़ा होगया"। जब लोगों को नीचे यह कहानी मालूम हुई तो वे बहुत घबराये और राजा को बचाने के लिये गिरजे में जाकर पादरी को बुलाकर ईश्वर प्रार्थना करने लगे। सत्य है असहायों के सहाय राम होते हैं। ईश्वर ने प्रार्थना सुन ली और खास उसी चट्टान पर एक दूसरा देहाती शिकारी आ पहुंचा। उसने राजा को नहीं जाना और पूछा, कहो यहाँ क्या कर रहो हो ? राजा ने उत्तर दिया
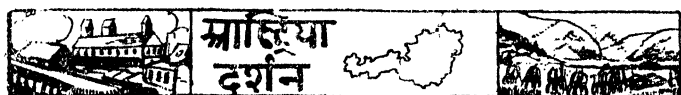
कि मैं एक मृगा की तलाश में हूँ। किन्तु देहाती शिकारी ने साथ साथ नीचे उतरने की अनुमति दी। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के सहारे चौबीस घंटे में नीचे उतरे। राजा के नीचे उतरने पर इनटाल के सभी गिर्जाघरों के घंटे बजने लगे। राजा ने देहाती शिकारी को इनाम दिया और अमीर बना दिया। उस रास्ते को कटवा कर एक गुफा में मन्दिर बनवा दिया और सेंट जान और मेरी की स्थापित कर दी।"

यहां दूसरी दिल बहलाव की वस्तु पहाड़ पर चढ़ने की है। इससे लोभ से लालायित होकर योरुप के निवासी यहां पर छुट्टियां बिताने आते हैं। यह दिल बहलाव दो प्रकार का है। एक तो केवल चट्टानों पर का चढ़ना है, दूसरे लोग बर्फीली चट्टानों में होकर मार्ग बना कर चढ़ते हैं। यह चढ़ाई दुर्गम और कठिन होती है। चढ़ने वाले को बहुत चतुर, फुर्तीला, शान्त और स्वस्थ होना चाहिये। जितना भाईचारा और प्रेम यहाँ अल्पस के ऊपर मनुष्यों में होता है उतना कदाचित् ही कहीं और होता हो। कारण कि सभी लोगों के आराम और कठिनाइयाँ एक होती हैं। यह कठिनाइयां

और खतरे खेलकूद के एक अंग होने के कारण आराम ही होते हैं। बर्फ को काट कर चढ़ने वालों को दिन प्रतिदिन मार्ग में झोपड़ियों में रुकना पड़ता है।

जो लोग अपने को ऐसे खतरे में डालना नहीं चाहते वह लोग अपनी छुट्टियाँ केवल यहाँ के ढालों और घाटियों पर रह कर बिताते हैं। यह लोग अपनी पीठों पर एक बोरा अपने सामानों से भरा हुआ लादे रहते हैं और यों ही इधर उधर सवेरे से संध्या तक घूमते रहते हैं। इनमें अधिकतर आस्ट्रियन और जर्मन होते हैं।

यद्यपि आस्ट्रिया में विदेशी लोग प्रति वर्ष अधिक से अधिक मात्रा में आते हैं तो भी यहाँ के शूरवीर अपनी स्मृति अलग ही बनाये हैं। अभी सन् १६३० ई० में इन्सबर्ग के एक विद्यार्थी ने बर्फ पर लकड़ी के जूते (स्की) पर दौड़ने का रिकार्ड दुनियाँ में स्थापित कर दिया है। वह ६६ मील प्रति घंटे के हिसाब से दौड़ा है। अब तक दुनिया में यही पहला व्यक्ति है जो इतनी तेज़ चाल से चला है। बरफ पर कूदने, फिसलने और हाकी खेलने में भी यहाँ के लोग बहुत चतुर हैं। बाहरी लोगों के खेल के स्थान केवल सेन्ट ऐन्टन और अर्लबर्ग और

किज़बुहेल हैं। किन्तु यहां के लोग जहां कहीं भी रहते हैं वहीं अपने खेलने का स्थान ढूँढ़ लेते हैं। केरिन्थिया, साल्ज़ कमरगट, सेमरिंग पास (दर्रा) आदि स्थान इन के लिये प्रमुख हैं।

पहाड़ों का भीतरी प्रदेश या टायरल

लगभग १२ साल हुये सारे टायरल प्रान्त का नाम पहाड़ों के अन्दर का देश पड़ा। तेरहवीं शताब्दी में इसका नाम यहाँ के सब से बड़े भूमिपति ने टायरल रक्खा। यह प्रान्त स्विट्ज़रलैंड और वियना के अन्तर्गत अल्प्स और आस्ट्रो-जर्मन सरहद् के बीच का प्रान्त है। इन अल्प्स की पहाड़ी श्रेणियों से घाटियाँ और छोटी श्रेणियाँ इनटाल नदी तक जाती हैं। यह नदी उत्तरी पर्वतीय श्रेणी से दक्षिण की अपेक्षा अधिक समीप है। इसलिये बड़ी और उपयोगी घाटियाँ अल्प्स से नीचे आने वाली हैं। इसी के साथ साथ इटली और आस्ट्रिया की नई सीमा है।

सन् १६१८ के पहले टायरल प्रान्त अपने का दुगना था। किन्तु सेन्ट जर्मन की संधि के अनुसार सारा दक्षिणी टायरल और केरिन्थिया का कुछ भाग इटली को दे दिया गया और डोला माइटस से सरहद् हटाकर

अल्प्स को श्रेणी कर दी गई है। आस्ट्रिया की जितनी भी हानि हुई उसमें से यह भाग निकल जाना सर्वोत्तम हानिकारक सिद्ध हुआ क्योंकि टायरल प्रान्त आट्रिया का सबसे प्राचीन प्रान्त है और यहां की भाषा जर्मन है। अब भी यहाँ के निवासियों के सम्बन्धी आस्ट्रिया में रहते हैं। इटली केरिन्थिया और साल्ज़वर्ग के बीच का कोना जिसे पूर्वी टायरल कहते हैं अब केवल यही भाग पंचायती राज्य में रह गया है। स्तोस टायरल जो कि पुरानी राजधानी है, अब इटली में है। सन् १३७३ ई० में यह हैप्सवर्ग घराने के आस्ट्रिया के ड्यूक के हाथ में आया और १९१८ तक सारा टायरल आस्ट्रिया राज्य में रहा।

प्राचीन काल (जब कि केवल किसान और डाकू ही यहां के निवासी थे) से आज तक इस राज्य पर हमेशा कोई न कोई आक्रमण होता ही रहा है। यहाँ के सुन्दर प्राकृतिक दृश्य ही इसके मुख्य कारण रहे हैं। कदाचित ही कोई ऐसे छोटे क्षेत्रफल का कोई राज्य हो जिसने इतने आक्रमण और लड़ाइयों का सामना किया है।

उत्तरी पर्वत, डोलोमाइट्स, और पूर्वी टायरल की तरह चूने के पहाड़ हैं। जैसे ही हम अर्लबर्ग से नीचे रेल द्वारा आते हैं, वैसे ही यह भाग हमको बांये ओर मिलता है। इनटाल के अन्तिम भाग के इधर उधर हमको धुँधले पर्वतीय ढाल मिलते हैं। इन पर दानेदार नुकीली चट्टानें हैं। इसके बाद अन्दर इनटाल में जो इन्सबर्ग से आरम्भ होता है अधिक उज्ज्वल और शोभायमान हैं। दक्षिणी सीमा के और अधिक ऊँचे पर्वत बिल्लौर और स्लेट के हैं। यह चाकू की भाँति नुकीले और तेज़ हैं। इनके ऊपर बरफ है और ऐसे ऐसे गड्ढे हैं जिसमें ग्लेशियर बनते हैं। टायरल में जंगली पर्वतीय ढाल हैं जिनमें हरे भरे स्थान हैं। यहीं सेब नाशपाती और आलू-बुखारा के बाग़ों के बीच झोपड़े छिपे हुये दिखाई पड़ते हैं। गुम्बद सुई की भाँति आकाश की ओर उठे हुये दृष्टिगोचर होते हैं। सेब, नाशपाती और आलू-बुखारा के बौर घाटियों में शीतकाल में बर्फ के ढेर बन जाते हैं।

अर्लबर्ग के दूसरी ओर ओरलबर्ग का छोटा प्रान्त है। यह आस्ट्रिया का पश्चिमी द्वार है। यहाँ के दृश्य

बहुत ही सुन्दर हैं। वह प्रान्त भी टायरल की भांति ही है। कान्सटेन्स झील के पूर्वी किनारे पर यहां की राजधानी ब्रीगेन्ज़ है। यहाँ पर स्विट्ज़रलैण्ड से आने वाले यात्री टायरल में घुमने के पहले एक या दो दिन तक निवास करते हैं। यहाँ पर पहाड़ के ऊपर एक पुराना गाँव है। यह बहुत ही सुन्दर है। यह चारों ओर प्राचीन घरों से घिरा है। झील की ओर सुन्दर, रमणीक मार्ग हैं। यहाँ दोनों ओर वृक्षों से सुशोभित एक भ्रमण मार्ग है। जो झील के अन्दर तक चला जाता है। गाँव के पीछे की ओर हवाई रेल है। यह लाइन सुन्दर जंगलों से सुशोभित है। इस पर चढ़कर लोग शिखर के ऊपर जाते हैं और झील का सुन्दर दृश्य देखते हैं, किन्तु प्रसिद्ध ब्रिगेन्ज़ की गाथायें सचमुच ही प्राचीन कहानी की भांति हैं। यहाँ की शूरवीर रमणी ने किसी समय इस प्रान्त को टायरल वालों के अधिकार में जाने से अचानक रात्रि के समय बचाया था। उसका कुछ भी चिन्ह यहाँ नहीं हैं।

इन नदी की घाटी में फील्ड किर्च तक ब्रीगेन्ज़ से अलवर्ग को जाने वाली रेलवे लाइन हैं। यह ऐसे मार्ग होकर जाती है जिसके दोनों ओर पर्वत और वन हैं। यहां से

राइन नदी के बहने का शब्द सुनाई पड़ता है। पहले बलडेन्ज़ पड़ता है। यह यहां के क़िले की दीवाल के नीचे होकर जाती है। तब ऊपर क्लास्टरनल पेलैन्जन को और फिर अलबर्ग की सुरंग होकर निकलती है। ओरलबर्ग में आस्ट्रिया के सभी स्थानों से अधिक लू चलती है। यह गर्म और सूखी वायु साधारणतः धीरे धीरे चलती है किन्तु कभी आंधी के रूप में बदल जाती है। इस हवा के कारण बरफ पिघल जाती है और छोटे छोटे नदी-नाले बहने लगते हैं। सड़क पर सुरंग के ऊपर लार्च और बलूत की लड़कियाँ हैं। पहाड़ी नुकीली चोटियां, घास के मैदान और बनों से होकर ऊपर पर्वत पर यह सड़कें जाती हैं। ओरलबर्ग और टायरल के बीच पहुंच कर हमें सड़क के कायदे उसी भाँति मिलते हैं जैसे इङ्गलैण्ड में हैं। किन्तु और सारे आस्ट्रिया में दाहिने ओर रह कर रास्ता तय करना पड़ता है।

यह डैन्यूब और राइन के बीच का ऊँचा प्रदेश है। यहां पर बहुधा तूफान और आँधियां आती हैं। यहां का पानी उत्तरी-सागर और बाल्टिक सागर में जाता है। यहां सेन्ट क्रुस्टोफर की स्मृति लकड़ी पर बनी हुई थी।

स्मृति एक चौकी में बनी थी। इस चौकी में तूफान से परेशान लोग आकर आराम लेते थे। क्रुस्टोफर की मूर्ति बाद में तोड़ डाली गई, क्योंकि यह विश्वास था कि जो इसको तोड़ डालेगा उस को घरेलू बीमारी (घरेलू प्रेम) से छुटकारा मिल जावेगा।

सेन्ट ऐन्टोनी से उतरने पर रेलवे लाइन ट्रीसाना पुल को पार कर पाज़नानरटम पर पहुँचती है। यह बड़ा गहरा दर्रा है जिस पर मेहराव बना है। वीस वर्ग एक क़िला बना है, जिसकी कारीगरी देखने योग्य है। इस के बाद लेनडेक में पहुंचते हैं। फिर इन नदी की सैर होती हैं जो यहाँ की मुख्य नदी है और डेन्यूब की सब से बड़ी सहायक है। लैन्डैक १५ मील बाद मिलता है। यह एक घाटी है। यहां के दृश्य, मनुष्य और रीति रिवाज़ सब अलग हैं। इस घाटी के ऊपर आस्ट्रिया का सर्वोच्च गाँव अवर गुरगल है। यह समुद्रतट से ५००० फुट से अधिक ऊँचा है।

यहाँ से इन्सवर्ग तक रेलवे लाइन के नीचे इन नदी तेज़ी से बहती है। जब यह ग्लेशियर और बर्फीले स्थानों में होकर बहती है तो ख़ाकी हो जाती है। जाड़े में हरी नीली रहती है। थोड़ी देर बाद गाड़ी स्टाम्ज़

पहुँचती है। स्टाम्ज में मठ बहुत हैं। आगे दूर बाएँ ओर चलकर सीमा पर जुग्सपिटज मिलेगा। यहां पर हवाई रेलवे है। यह रेलवे २० मिनट में जर्मनी के सर्वोच्च शिखा पर पहुँचाती है। फिर जिर्ल, मार्टिनस्वन्ड होते हुये यह इन्सबर्ग पहुँचती है।

इन्सबर्ग, टायरल प्रान्त की राजधानी है। उत्तर की ओर पहाड़ बिल्कुल शहर के समीप हैं। यह पर्वत एक बड़ी दीवाल की तरह है और बवेरिया से जो ठंडी हवाएँ आती हैं। उनसे यह शहर को बचाता है। इसकी स्थिति साल्स बर्ग को छोड़कर आस्ट्रिया भर में सबसे उत्तम है और व्यापार सम्बन्धी कार्यों में वियना से दूसरे दर्जे पर है। जैसा कि इसका नाम है यहाँ इन्न ही का पुत्र है और इसी कारण इन्न बर्ग इतना बड़ा और प्रसिद्ध हो गया। रोमन लोगों के आने के पहले यह पुल बना था। तब से आज तक जर्मनी और इटली का व्यापार और आना जाना इसी मार्ग द्वारा हुआ है। इस प्रकार यह सड़कों के चौरास्तों पर स्थित है, और इसी कारण इसकी इतनी उन्नति हो गई है।

इन्सबर्ग की मुख्य सड़क बेरिया थोरेसीन्स्ट्रासे

है। यह पहाड़ की ओर जाती है जिसका ऊपरी सिरा साल भर बरफ से श्वेत रहता है। यह सिरा बहुधा बादलों से छिपा रहता है। इसके निचले भाग में जब रात को लोग लैम्प लेकर झोपड़ों में चलते हैं तो आकाश के तारागण की भांति वह दिखाई पड़ते हैं। सेंट एनी के आगे चलकर सड़क कुछ कम चौड़ी हो जाती है। फ्रेडरिक्स ट्रासे इस नगर का प्राचीन भाग है जिसके अंत में गोल्डनीज डाचेल और छोटी सुनहरी छत (लिटिल गोल्ड रूफ) है। छत के ऊपर बरामदा है। यह बरामदा मैक्समिलियन का बनवाया हुआ है। यहाँ पर बैठकर राजा राह चलने वालों का तमाशा देखता था। इसका अगला भाग संगमरमर का बना हुआ है। जिसमें राजा, शिकारी भेष, दिल्लगी और मजाक वाले खेल तमाशों के दृश्य खुदे हुये हैं। छत छोटे छोटे तांबे के टुकड़ों से बनी है जो सोने के टुकड़ों की भाँति मालूम होता है। इन्सबर्ग में यह कहावत है, कि इसको फ्रेडिरिक खाली जेब वाले ने बनवाया था। खाली जेब उसका दूसरा नाम था। यह कहावत उसी नाम को झूठा करने के लिये है क्योंकि जब मैक्स मिलियन ने बरामदा बनवाया था तो फ्रेडिरिक स्टाम्स के टाम्ब में रहता था।

मैक्समिलियन, मार्टिनस्चांड नाटक का मुख्य पात्र है। उसने इन्सबर्ग नगर की बड़ी उन्नति की। वह अपनी कचहरी यहीं करता था। उसने काफी रुपया खर्च करके एक महल बनवाया और अच्छे अच्छे कारीगरों को नगर में लोभ देकर बसाया। यह सारी बातें उसने उस चांदी से की थी जिसको उसने अन्टर इनटाल में पाया था। होफ किचे में उसकी समाधि है। यह मूर्ति घुटनों के बल ठोस पीतल की बनी है। उसकी मानरक्षा के लिये और कई एक मूर्तियां बनी हैं जो उसके पूर्वजों और वीरों की हैं। इनमें एक मूर्ति इंगलैंड के राजा आर्थर की है।

इन्सबर्ग में दो अजायबघर हैं। यहां के सभी यात्रियों को चाहिये कि वे जब यहाँ जावें तो इन्हें देखें। ये टायरल के इतिहास के बारे में इतिहास की किताबों से कहीं अधिक बतलाते हैं। फरडीनैण्डियम इन दोनों में पुराना है। यहाँ पर रोहेशियन, रोमन और प्राचीन जर्मन के बारे में काफी मसाला है। हथियार, कारखाने की कारीगरी, कला-कौशल सभ्यता आदि सभी बातों की सामग्री यहाँ पर इकट्ठी हैं। टायरल के दृश्यों

के चित्र और हस्तकला का अच्छा उदाहरण यहाँ पर है।

देहाती कला-कौशल का अजायबघर (दी म्यूज़ियम आफ पेज़ेन्ट आर्ट) सन् १९२९ ई० में खुला है। यह सोलहवीं शताब्दी वाले एक बड़े मठ में बड़े ठाट बाट के साथ बनाया हुआ है। यहां पर चार सौ साल पहले के ग़रीब लोगों के झोपड़े अपनी असली सूरत में लाकर रक्खे गये हैं। उनके अन्दर वही पुरानी वस्तुएं हैं। उनकी बनावट भी वही पुरानी है। यहाँ धातु की वस्तुएँ बड़ी संख्या में हैं। ये वस्तुएँ प्राकृतिक रूप में सीधे सादे मनुष्यों द्वारा बनी हुई हैं। यहां पर मनुष्यों की जीती जागती लकड़ी की मूर्तियाँ हैं। वे अपने राष्ट्रीय भेष में हैं। उनके दिनचर्या की सभी सामग्री और सामान यहाँ पर रक्खे हैं।

होफकिर्चे में ऐन्ड्रीज़ होफर की मूर्ति है। इसने अपने देश को विदेशी हाथों से स्वतंत्र किया था।

हाल में प्रसिद्ध नमक की खान है। स्चाज में चांदी की खान है। इसका वृत्तान्त ऐसा है कि एक बार एक किसान की लड़की बैल चरा रही थी। उसने देखा कि

उसका एक साँड अपनी सींग से पृथ्वी को खोद रहा था। उसी समय चाँदी का एक छड़ निकल आया। इस प्रकार यह खान मिली। स्चाज़ से कुछ दूरी पर हवाई रेल है। यह जेन वाच से लौली को जाती है। इसके दूसरी ओर ज़िलअटाला की घाटी है। यहां पर आकर यात्रियों को दो मार्ग मिलते हैं। एक तो इन नदी होकर जाता है। इस रास्ते में एक बहुत ही तंग मार्ग है। जहाँ होकर जर्मनी को मार्ग जाता है। इसी रास्ते में कुफ्स्टीन का स्तम्भ है। दूसरे मार्ग से जल्द ही हम किटज़बुहेल नगर पहुंचते हैं। यह एक सुन्दर नगर है। वाइल्ड कैसर इस नगर को उत्तरी हवाओं से बचाते हैं। इस नगर में दो पर्वत हैं। यहाँ पर दूसरी हवाई रेल यात्रियों को हाहनेनकाम के सिरे पर ले जाती है। यहाँ पर संध्या के समय टहलने में बड़ा आनन्द आता है। यहाँ नहाने के लिये गर्म सोते की एक नहर है।

पूर्वी टायरल वर्तमान प्रान्त से अलग है। यहाँ से पूर्वी टायरल जाने के लिये घूम कर जाना पड़ता है। पूर्वी टायरल की राजधानी लिंज़ है। यद्यपि लिंज़ के निवासी बिल्कुल टायरल हैं, तो भी देखने से यह नगर

इटालियन प्रतीत होता हैं। यह नगर ड्रावे की घाटी के वदान में स्थित है। इसके चारों ओर लिंज़ डोलोमाइट्स पर्वत दीवार की भांति घेरे है। इस पर्वत का रंग पीला तथा भूरा है। कहीं कहीं इस पर धातें भी मिलती हैं। वलूत, नारंगी और पिंक के बाग हैं। वह पर्वत शीतकाल में बरफ से ढक जाता है। लिंज़ से ग्रास ग्लाकनर शिखा आस्ट्रियन अल्प्स में सर्वोच्च है। लिंज़ से यहां जाते समय रास्ते में हीलीजेनब्लट नगर है। ग्रास ग्लाकनर की चोटी साल्स वर्ग कैरिनथिया और पूर्वी टायरल के सरहद पर स्थित है।

टायरल के वीर पुरुष

यहां के निवासियों ने अपनी सच्ची देश भक्ति और देश-प्रेम की मिसाल नैपोलियन का सामना करके सदैव के लिये दुनिया के सामने रख दी है। नैपोलियन के पहले आक्रमण में आस्ट्रियन सेना मान्टुआ के पर्वतीय प्रदेश में होकर फ्रेन्च सेना के सामने आ डटी। यद्यपि यहां के निवासी आस्ट्रिया के राजनैतिक दृष्टिकोण की कुछ भी परवाह न करते थे, तो भी जब उन्होंने बैरियों को अपने देश में देखा तो वे एक हो गये। जब पहले पहल फ्रेञ्च लोग प्रान्त में घुसे तो वे यहां वालों को देख कर घृणा की दृष्टि से हँसे। किन्तु उन्हें तीन ही सप्ताह के पश्चात् मालूम हो गया। कि यहाँ के निवासी क्या हैं? क्रोध के आवेश में आकर यहां के बूढ़े, युवक, स्त्री और बच्चे सभी कमर बांध कर निकल पड़े और फ्रेञ्च सेना को अपनी घाटियों से मार भगाया।

आठ साल बाद जब आस्टूरलिट्ज़ की लड़ाई में आस्ट्रिया की हार हुई तो फ्रांस ने टायरल प्रान्त को बेवेरिया और अपने बीच बांट लिया। लगभग चार साल तक बैरियों के अत्याचार का जुँआँ इनके कंधे रहा

किन्तु इसी बीच यहां के लोग चुपचाप अपनी स्वतंत्रता के लिये षड्यंत्र रचते रहे। यह एक बहुत ही कठिन कार्य था। वियना हार के कारण बिल्कुल ही हिम्मत नहीं करता था। इसके सिवा फ्रांस और बेवेरिया के खुफिया सदैव सभी स्थानों में भ्रमण करते थे। किन्तु फिर भी यह षड्यंत्र चुपचाप चलता रहा और निस्संदेह संस्थाओं के बीच जोरों से तयारी होती रही। प्रत्येक घाटी के निवासियों को वहां की सेना का लेखा रखते हुये तयार किया जा रहा था। उस समय टायरल के अगुवा सराय के मालिक ही होते थे। उन्हीं को दुनिया की खबर थी, और उन्हीं के द्वारा दूसरे लोग भीतरी हाल ज्ञात कर सकते थे। इन लोगों ने षड्यन्त्रों का नियंत्रण बड़ी दिलेरी और चतुरता से किया।

एन्ड्रीज होफर पैसियुर घाटी में ब्रेनर के दक्षिण एक सराय का मालिक था। यही वीर यहां के षड्यंत्र का अगुआ था। इसका शरीर मज़बूत था, कंधे चौड़े थे, काले बाल और गोल चेहरे पर चमकती आखें सुशोभित थी। इसके काली लम्बी डाढ़ी थी। यह अपने रष्ट्रीय भेष में रहता था। होफ़र एक बड़ा देशभक्त और देश प्रेमी था। इस खतरनाक कार्य में इसके दो सहयोगी

थे। एक तो जोज़ेफ स्पेक वाचर था। यह एक किसान-लड़का था और जन्म से वीर था। इसको लोग रिन्न का मनुष्य कह कर पुकारते थे। इसका केन्द्र इन्सवर्ग और हाल के बीच में था। तीसरा व्यक्ति गुपचुप संस्था का एक साधू था। इसका नाम जोचिल हास्पंगर था। यह अपने दोनों षड्यंत्रकारी और धार्मिक कार्यों को करता था। अपने हाथ में ईसा के फांसी पर चढ़ने की तस्वीर लिये इस घाटी से उस घाटी दौरा करता था। इसका प्रचार यही था कि ईश्वर की दृष्टि में यह हमारा परम कर्तव्य है कि हम अत्याचार से लोगों को बचावें और स्वतंत्र तथा स्वाधीन हों। धार्मिक किसान ऐसे भाषण को चित्त लगाकर सुनते थे, और कार्य रूप में परिणित करने को शीघ्र ही तैयार हो जाते थे।

देश-प्रेम की लहर ऐसी चली कि कोई भी व्यक्ति धोखेबाज़ न रहा। सभी एक साथ कंधे से कंधा जोड़कर बैरियों के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार हो गये। १८०६ ई० के शुरू में एक गुपचुप बैठक होफर, मैन आफ रिन और लड़ाकू पादरी की हुई। इन लोगों ने तय किया कि अब समय कार्य आरम्भ करने का आ गया है। उसी के अनु-

सार दस अप्रैल को आग की चिन्गारी प्रत्येक पर्वतीय चोटियों पर लगा दी गई। ग़रीब मज़दूर और किसान पहले ही से बाट जोह रहे थे। शीघ्र ही अपने अपने हथियार लेकर तयार हो गये। यद्यपि इन बेचारों के पास बड़े हथियार तो थे नहीं क्योंकि, वेवेरियन और फ्रेन्च सिपाहियों ने पहले ही इनके घरों की तलाशी ले ली थी। तो भी होफर की अध्यक्षता में पन्द्रह हजार आदमी गड़ाँस, हँसिया, खुर्पे और बड़ी बड़ी लाठियां लेकर इन्सवर्ग के सामने आ गये। इसके सिवा सब से बड़ा हथियार उनके पास यह था कि वह अपने देश की प्राकृतिक भूमि को भली भाँति जानते थे और दुर्गम स्थानों पर लड़ाई लड़ना भी उन्हें मालूम था। वे बहादुर तो थे ही साथ ही साथ उनको बैरियों से बुरी घृणा भी थी। एक बड़ी भयानक लड़ाई हुई। होफर की जीति हुई और इन्सवर्ग होफर के अधिकार में आगया। स्पेकवाचर ने उसी दिन विल्टेन नामी स्थान पर ५,००० वैरी सेना को घेर लिया। महीने का अन्त होते होते सारा टायरल फिर टायरलियों के अधिकार में आ गया।
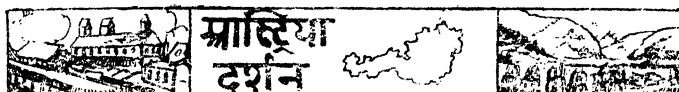
टायरल स्वतंत्र हो जाने की बात जब आस्ट्रिया को प्रकट हुई तो उसके मुँह में पानी भर आया। आस्ट्रिया

सरकार ने आस्ट्रियन सेना के एक जनरल को चार्ज लेने के लिये भेजा। किन्तु वह इतना अयोग्य और शक्तिहीन था कि चार हफ़्ते के भीतर ही टायरल फिर बैरियों के हाथ में चला गया। टायरलियों ने दिखा दिया था कि वे क्या कर सकते हैं। इसलिये होफर ने साहस नहीं छोड़ा। उसने फिर दोबारा षड्यंत्र की तैयारी शुरू कर दी। चील की भांति वह पर्वतों में भ्रमण करने लगा। इस बार उसे और भी अधिक डर था। इसलिये वह अपना कार्य रात में करता था। वह अपना संकेत लोगों को देता जाता था और उनसे उत्तर भी लेता जाता था।

इस बार यह लोग मैदान में न जाकर इन्सवर्ग के समीप एक तंग दर्रे में ठहरे। इनको पूरा विश्वास था कि बैरी सेना उनको बर्बाद करने के लिये उसी रास्ते से आवेगी। हुआ भी ऐसा ही। जैसे ही बैरी सेना पहुँची उसे दोनों ओर पहाड़ों से भयानक आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ टायरल के मर्द, स्त्री, लड़के और लड़कियों की थी। इन लोगों ने पेड़ों के तने, डाल, पत्थर और चट्टानों को अचम्भित बैरी सेना पर फेंकना

शुरू किया। बैरी सेना भाग खड़ी हुई उस दिन होफर ने इन्सवर्ग पर अधिकार करना अच्छा न समझा और विल्टन के ऊपर ईसेल वर्ग पर अपना डेरा डाला। दूसरे दिन सवेरे कैपचिन (पादरी लीडर) ने मांस संस्कार की प्रथा वहीं मनाई। उसके कुछ घंटों के पश्चात् इन लोगों ने नगर पर धावा मारा और अधिकार में कर लिया। उसी दिन गोल्डनर एडलर में एण्डरूज् होफर ने नागरिकों से कहा "जीत के नारे न लगाओ वरन् घुटनों के बल बैठकर ईश्वर को धन्यवाद दो, मैं सौगन्द खा कर कहता हूं कि मैंने नहीं वरन् ईश्वर ने स्वयं हमारे देश को बचाया है।"

होफर ने इन्सवर्ग के राजमहल में रह कर दो महीने तक टीराल का राज प्रबन्ध सुन्दर ढंग से किया। किन्तु न तो उसे महल राजा से (जो वियना में रहता था) कोई सहायता ही मिली और न धन्यवाद ही मिला। अन्त में अक्टूबर के अन्त में वियना से खबर आई कि फ्रांस से संधि हो गई है और हैप्सवर्ग की कुमारी नैपोलियन को दी जावेगी और टायरल प्रान्त बेवेरिया को मिलेगा। होफर को आज्ञा मिली कि वह अपने हथियार डाल दे और टायरल के बेवेरियन जनरल के

हाथ में सौंप दे। क्रोध के आवेश में आकर उसने इन्कार कर दिया। इसके साथी अब हताश हो चुके थे। इसलिये होफर को पहाड़ पर भाग जाना पड़ा।

वह भाग कर दूर की एक घाटी में जा छिपा। उसे सरकारी सिपाही ढूँढते रहे। एक दिन जनवरी के महीने में एक धोखेबाज़ बैरी सिपाहियों को लेकर पहाड़ी के ऊपर होफर के झोपड़े पर पहुँच गया। होफर उन्हें द्वार पर ही मिल गया और कहा "मैं वही हूँ जिसे तुम ढूँढ़ते हो"। वे सिपाही उसे पकड़ कर ले चले। मार्ग में उन्होंने रात एक झोपड़े में काटी। इस झोपड़े में अचानक अग्नि लग गई। चाहता तो होफर भाग सकता था। किन्तु वह भागा नहीं वरन् अग्नि शांति करने में लगा रहा। मान्टुआ पहुँच कर उसे मृत्यु दण्ड मिला। होफर ने कुछ रुपये बैरी सैनिकों को दिया और उनसे कहा कि वे अपने कार्य को भली भाँति करें। आँखों पर उसने पट्टी नहीं बँधाई और कहा कि मैंने तोपों के मुँह में देखा है। उसने थोड़ी देर प्रार्थना की, फिर टायरल नारा लगाया और अन्त में गोली मारने का स्वयं हुक्म दिया।

आस्ट्रिया की कहानियाँ तथा उसके नगर

हमारे यहां के गाँवों की भांति यहाँ के जंगली और देहाती गावों में भी पौराणिक काल की कहानियाँ तथा कहावतें बहुत प्रचलित हैं।

यहां के अन्ध विश्वासियों के अनुसार यहाँ की भूमि कल्पित जीवधारियों और प्राणियों से भरपूर है। जब कभी कोई प्रचण्ड वायु चलती है और चारों ओर सुगन्ध फैला देती है तो यहाँ के लोगों का विश्वास होता है कि कोई बन देवी या देवता (वाइल्डर जोगर) भ्रमण करता हुआ निकला है। पर्वतीय शिखाओं पर सैकड़ों नन्हें नन्हें पुरुष रहते हैं जिनको यह लोग नार्ग्स कहते हैं। यह गुप्त रूप से सदैव मनुष्यों के साथ मिलते रहते हैं। यह कभी कभी तो मनुष्यों की सहायता करते हैं। किन्तु अधिकतर उत्पात करते हैं। यह लोग कभी तो दूधवाली की दोहनी ढकेल देते हैं और कभी देहाती बेचारों को जंगलों में ले जाकर भुला भटका देते हैं और कभी घसियारों की रोटी चुरा लेते तथा मक्खन उठाकर पहाड़ों के नीचे फेंक देते हैं। एक और बदमाश देव वाइल्डर मैन होता है जो शिकारियों के पैर फिसला कर

तोड़ देता है और जंगलियों की कुल्हाड़ी फिसला कर उन्हें घायल कर देता है। गाँवों के बच्चे नार्ग्स से बहुत डरते हैं और अपने दरवाज़ों को मज़बूती से बन्द रखते हैं नहीं तो यह नन्हें पुरुष (नार्ग्स) आकर उन्हें सोते समय सताते और चिढ़ाते हैं। इनके सिवा और भी नाचवाक खेती की देवी और एर्डमैनलीन खनिज पदार्थों का देव है।

यहाँ प्रत्येक घाटी और प्रान्त की कहावतें तथा कहानियाँ अलग अलग हैं। बहुधा ये कहानियाँ धार्मिक रंग में रंग दी जाती हैं और उनमें महापुरुषों, महात्माओं और बाइबिल के किस्से होते हैं।

यहाँ हम एक राजा और उसके तीन पुत्रों की कहानी देते हैं। यह कहानी प्रसिद्ध राजा जोज़फ और उसके भाइयों पर बहुत कुछ प्रकाश डालती है।

एक राजा के तीन पुत्र थे। उनमें से दो युवा और एक बालक था। राजा सब से छोटे को अधिक प्यार करता था। एक दिन राजा शिकार खेलने गया। रास्ते में पर्वतों के ऊपर कहीं उसका हीरे और मोतियों का हार गिर गया। जब राजा घर आया तो सारी

कहानी अपने पुत्रों से कही। उसके छोटे पुत्र ने राजा को यह कह कर कि हम तीनों भाई ढूँढ़ लायेंगे शान्ति दी। दूसरे दिन तीनों भाई पर्वत की ओर चले। कई घंटे तक यह लोग पहाड़ों पर ढूँढ़ते रहे। अन्त में छोटे भाई ने एक झरने के पास एक दरार में हार पाया। बड़े भाई तो उससे पहले ही से जलते थे। उन्होंने उसे मार कर फेंक दिया और हार लेकर घर आये। बाप से उन्होंने बतलाया कि उनके छोटे भाई को रीछ पकड़ ले गया है। एक साल के बाद उसी बन में एक गड़रिये का लड़का अपनी भेड़ें चराता उधर से निकला। उसने राजा के छोटे लड़के की पड़ी हुई हड्डियों में से एक उठा ली और उसका बाजा बना कर बजाने लगा। आश्चर्य के साथ उस चरवाहे ने सुना कि सुरीले शब्द की जगह उसमें से वही दुःखदाई कहानी उस छोटे बालक की सुनाई पड़ रही थी। वह उसे लेकर राजा के पास आया। राजा ने अपने पुत्रों के सहित आश्चर्य पूर्वक कहानी सुनी और फिर अपने पुत्रों को फांसी दे दी।

इसी प्रकार विल्स्टन के मठ की कहानी है। इसके दो भयानक देव मुख्य पात हैं। यह मठ इन्सवर्ग के बाहर है। एक दिन एक देव जिसका नाम हेमैन था,

विल्स्टन में टिरसस देव के पास आया। हेमैन गाथ्स की सेना का सैनिक रह चुका था। टिरसस एक बड़े पेड़ को उखाड़ कर बड़ी धमक के साथ चलता था। जिससे पृथ्वी हिलने लगती थी और बड़ी गरज की आवाज़ होती थी। किन्तु यह लड़ने में चतुर न था। हेमैन ने इसे लड़ाई में परास्त किया और मार डाला। जैसे ही मार कर वह उसके विशाल मृतक शरीर पर खड़ा था वैसे ही वेनीटिक्टाइन का एक साधु उधर से निकला। साधु ने हेमन को बहुत समझाया जिससे उसकी चाल बदल गई। हेमैन ने सोचा कि जहाँ पर उसने उस टिरसस को मारा है वहाँ वह एक बड़ा मठ बनावे।

जैसे ही प्रकाश हुआ हेमैन ने अपना पत्थर ढोने और दीवार बनाने का कार्य आरम्भ किया। किन्तु टिरसस (भूत) एक अजगर का वेष धारण कर इधर उधर रहता था। जब रात होती तो टिरसस बनी दीवार गिरा देता था। हेमैन ने ताकना चाहा और एक दिन जब वह अजगर गिरा कर गुफा में घुस रहा था तो उसका सिर काट डाला। मारे खुशी के हेमैन ने एक

भारी शिला उठाकर फेंकी जो अमरास पहाड़ी में जाकर टकराई। फिर हेमैन ने जहां मारा था उसके और अमरास पहाड़ी के बीच दो मील के भीतर एक मठ बनाया। उसी का नाम विल्स्टन मठ है।

ओरलवर्ग में भी ऐसी कहानियां बहुत बड़ी संख्या में प्रचलित हैं। यहां पर सोने की नाशपातियों की कहानी दी जाती है। ब्रेगेन्ज़ के समीप एक गरीब किसान रहता था। उसके तीन पुत्र थे। उसके एक झोपड़े और नाशपाती के एक पेड़ के सिवा कुछ भी न था। प्रत्येक वर्ष किसान राजा को जो नाशपाती बहुत पसन्द करता था, एक टोकरी नाशपातियों की भेजा करता था। एक साल सितम्बर मास में सवेरे बड़े लड़के को सुन्दर नाशपातियों से टोकरी भरकर किसान ने राजा के पास भेजा। रास्ते में एक बहुत ही बूढ़ी स्त्री उसे मिली। बृद्ध स्त्री ने डंडे के बल झुके झुके प्रश्न किया "बेटा टोकरी में क्या है" लड़के ने डाइन जानकर उत्तर दिया, "पत्थर है"। बृद्ध स्त्री ने कहा ऐसा ही हो। दर्बार में पहुंच कर लड़के ने जब टोकरी राजा के सामने रक्खी तो उसमें पत्ती के नीचे सचमुच पत्थर ही थे। राजा ने लड़के को कारागार में डलवा दिया। उसके न आने पर किसान ने यह जान

कर कि कदाचित् उसको कोई बड़ा पद मिल गया होगा दूसरे को टोकरी लेकर भेजा। रास्ते में फिर वही बृद्धा मिली तो प्रश्न करने पर लड़के ने देवदार के टुकड़ों का बहाना किया। कचहरी पहुँच कर इसका भी वही हाल हुआ। अंत में किसान ने अपने छोटे पुत्र को फिर एक टोकरी नाशपाती लेकर राज दर्बार में भेजा यह बेचारा बिलकुल सीधा सादा था। जब बृद्धा फिर रास्ते में मिली और प्रश्न किया तो सीधे बालक ने कहा कि सुनहरी नाशपातियां हैं। दर्बार पहुँचने पर राजा ने टोकरी देखने तथा लेने में आनाकानी की। छोटी पूत्री के कहने पर राजा ने टोकरी माँगी। जब टोकरी खोली गई तो उसमें २० नाशपातियां ठोस सोने की निकलीं। राजा ने इस नाशपाती के वृक्ष को मगा कर अपनी बाग में लगवाया और किसान तथा उसके पुत्रों को अपने बाग का मालिक बना दिया।

केरिन्थिया

स्टीरिया और आस्ट्रो-हंगेरियन सीमा के बीच बर्जेन्लैण्ड की लम्बी पट्टी है। यह पट्टी हंगारी की है जो आस्ट्रिया में सम्मिलित है। यही एक भाग है जो प्राचीन आस्ट्रिया के बाहर का है। यह आजकल प्रजातंत्र राज्य में शामिल है। यहाँ मगयार भाषा जर्मन भाषा से अधिक प्रचलित है। इसके नाम के अर्थ गढ़ों या दुर्गों का देश (लैन्ड आफ कासिल्स) है। इस प्रान्त में गढ़ बहुत हैं अधिकाँश किले ऐसे स्थानों पर हैं जहां होकर देश में प्रवेश करने के प्रसिद्ध मार्ग हैं। तुर्की आक्रमण से बचने के लिये ये दुर्ग बनाये गये थे। पूर्वी किनारे और बड़ी झील के इधर उधर बड़े चौड़े घास के मैदान हैं। यहां से ही हंगारी के स्टेशन आरम्भ होते हैं। झील का नाम नियुसीडलर समुद्र है। यह एक ऐसी झील है कि न तो कोई नदी इसमें गिरती है और न कोई इससे निकलती ही है। कहीं पर भी इसकी गहराई नौ या दस फुट से अधिक नहीं है। यह लगभग सौ वर्गमील घेरे हुये है। जब इसका पानी सूख जाता है। तो किसान लोग खेती कर लेते हैं। ईसेन्स टार यहां की राजधानी है। यहां पर ईस्टरहेज़ी के हंगेरियन वंश के महल हैं।

यहां संगीतघर (गाने बजाने के स्थान) हैं। आल्टेस और ड्रावे घाटी के बीच स्टीरिया का जंगली प्रान्त बसा है। ड्रावे की घाटी आजकल यूगोस्लैविया के अधिकार में है। यहाँ के निवासी पहनावे और चाल ढाल में आस्ट्रियन की भाँति हैं। बीच और दक्षिण के निवासी इटैलियन हैं। आस्ट्रिया का दूसरा बड़ा नगर यहां की राजधानी गाज़ है। गाज़ की जन-संख्या वियना का पाँचवां भाग है। वियना, इन्सवर्ग और गाज़ इन तीनों नगरों में विश्वविद्यालय हैं। नूर घाटी के सिवा चारों ओर यह पर्वतों से घिरा हुआ है। गाज़ की तुलना स्थिति के अनुसार साल्ज़वर्ग से की जा सकती है। पर्वतों पर के क़िले जिसके टावर चौकोने हैं। यदि थोड़ी पैदल अथवा हवाई जहाज या हवाई गाड़ी पर यात्रा की जाय तो यात्रा बड़ी मनोरञ्जक होगी।

ऊपर से गहरी लाल छतें और शहर उससे दूर बाहर तक दिखाई देतो हैं। नूर नदी के बाँये किनारे पर कागज़, लोहे और कपड़े के कारखाने हैं। सब से अधिक प्रसिद्ध यहाँ की प्राचीन गलियां हैं। नगर सात पुलों को पार करके बना है। यहाँ पर प्राचीन, गोथिक

और उन्नत तीनों काल की कला कौशल का सम्मेलन है। बैरोक चर्चों की कला आस्ट्रिया भर में सर्वोत्तम है। इटली से नई सभ्यता और नये कला-कौशल के युग का आरम्भ हुआ। आस्ट्रिया ने उसे अपना लिया और राष्ट्रीयता का रंग दे दिया। उसी के कारण आज हम उस कला का प्रदर्शन हर एक स्थान पर करते हैं। चर्चों के दर्वाज़ों पर, अन्दर दीवालों, छतों पर और दूसरी जगहों पर ये कलाएँ मौजूद हैं। शिल्पकला और चित्र-कारी यहां बहुत है। इन्हीं कलाओं में साधुओं के जीवन-कथा तथा मनुष्यों का रत्ता-प्रेम इत्यादि का प्रदर्शन भली भांति किया गया है।

गाज़ से केरिन्थिया हमें घूम कर जाना पड़ता है। लियोबेन होकर रास्ता जाता है। लियोबेन नगर के मुख्य चौराहे पर एक मूर्ति एक बालक की है। यह मूर्ति इस स्थान पर कोयले की खान के केन्द्र होने की सूचक है। इससे उत्तर में ईसेनर्ज है जहां लोहे की खान है। यहां से कच्चा लोहा इन्सबर्ग को जाता है। जहां सुन्दर हथियार और तलवारें बनती हैं। यहां की तलवार बहुत प्रसिद्ध है। यहां से कुछ दूरी पर एक बारह मील का गड्ढा है जहां इन नदी गरजती, धाड़ती और हहराती

बहती है। यह गड्ढा आस्ट्रिया के अलौकिक प्राकृतिक दृश्यों में से एक हैं। इसको आस्ट्रिया के निवासी गुलगपाड़ा जेसासे कहते हैं।

केरिन्थिया प्रान्त की सारी लम्बाई में होकर ड्रावे नदी बहती है। पूर्वी टायरल से चलती है और बुदापेस्ट और बेलग्रेड के बीच डैन्यूब से मिल जाती है। इसकी घाटी में तीन बड़ी बड़ी झीलें हैं। दक्षिण की ओर कारनिक अल्पस और कारावानकन की श्रेणियां हैं। इसके वेसिन में क्लाजेनफर्ट बसा है। यह नगर इस प्रान्त की राजधानी है। यह नगर बहुत ही शान्त और सुस्त है। यहां पर इस प्रान्त का अजायबघर है।

क्लाजेन्फर्ट का बाहरी भाग केरिन्थिया की सबसे बड़ी झील वर्थरसी के किनारे तक जाता है। जाड़े के दिनों में इस झील का ऊपरी तल बरफ से जमा रहता है। किन्तु गरमी के दिनों में यह झील गर्म हो जाती है। और आस्ट्रिया के जलाशयों में सर्वश्रेष्ठ और प्रसिद्ध हो जाती है। जून से सितम्बर तक यहां के ढालों के गांव और नगर यात्रियों से भरे रहते हैं।

ठहरने के स्थानों में प्राचीन मैरिया वर्थ है। यह क्लैजेन्फर्ट और वेल्डेन के बीच स्थित है। यहां पर दो सुन्दर बागों के बीच में चर्च है। यहां के होटल बहुत ही चमकीले तथा भड़कीले हैं। यहाँ से रेलवे लाइन विलाच को जाती है। विलाक ट्रीस्टे लाइन और रूम सागर लाइन का यह जंकशन है। इसी स्टेशन होकर साल्ज़वर्ग और केरिन्थिया की लकड़ी इटली जाती है जिसके लिये यह नगर बहुत ही प्रसिद्ध है। इससे आगे चलने पर मिल्स टाट की झील मिलती है। इस झील के कुछ मीलों बाद रास्ता पहाड़ों की ओर घूम जाता है।

यह लाइन भी अर्लवर्ग लाइन की भांति ही अद्भुत और आश्चर्यजनक है। यह लाइन भी कभी ऊपर जाती है। तो कभी सीधे नीचे उतरती है, कभी मुड़ती है तो कभी पाँच पाँच मील सुरंग के भीतर ही भीतर आती है। यह लाइन भी यात्रा करने योग्य है।

केरिन्थिया प्रान्त की टाडर्न सुरंग का दस मिनट का मार्ग तय करके लोग साल्ज़वर्ग प्रान्त में पहुँचते हैं। कुछ ही मिनटों के बाद लोग वैडगास्टीन पहुँचते हैं। यहां आस्ट्रिया की सर्वोत्तम खानें हैं। वैडगास्ट्रीन ऐके की घाटी के ढाल पर बना है। यहां पर

दो झरने हैं। यह नगर के बीच में है। झरने के दोनों ओर ऊँचे घर, अस्पताल और होटल हैं। झरनों का पानी गठिया रोग के लिये बहुत ही लाभदायक है। इसलिये बड़े बड़े होटलों और घरों में लिया जाता है किन्तु यह पानी बिलकुल नीरस और फीका है।

आगे चलकर होफ-गास्टेन का सोता है। इसके ऊपर होकर रेलवे लाइन जाती है। गास्टेन की घाटी होकर स्च्वारज़ाच को लाइन पहुँचती है। यहां पर यह लाइन इन्सवर्ग, किट्ज़बुहेल और ज़ेलाम सी से आने वाली लाइनों से मिलती है। ज़ेल की झील पर्वतों में दर्पण का काम देती है। यहाँ कई घाटियां आकर मिलती हैं और इन घाटियों के बीच ऊँची पहाड़ी श्रेणियां बरफ से ढकी रहती हैं। देवदारु के जंगल और घास के मैदान पानी के किनारे से ही आरम्भ हो जाते हैं। किनारे के एक टीले पर गांव बसा हुआ है। यहां पर साल भर शान्त, सुन्दर और आकर्षक दृश्य रहते हैं। पिंज़गाऊ घाटी के मुख पर ज़ेल बसा है। यहां का सोता सालज़ाच है। इसके ऊपर सुन्दर क्रिम्मिल झरने हैं।

साल्ज़वर्ग योरुप के सर्वोत्तम सुन्दर नगरों में से

एक है। आस्ट्रिया का तो यह सर्वोत्तम नगर है ही। यह बेवेरियन अल्प्स के नीचे जहाँ साल्ज़च की घाटी चौड़ी होती है वहाँ बसा है। पहाड़ के नीचे नदी के दोनों ओर यह नगर बसा है। घाटी के ऊपर प्राचीन होहेन साल्ज़वर्ग का किला है। साल्ज़वर्ग बड़े लाट पादरी के रहने का स्थान है। इन्हीं प्राचीन लाट पादरियों का यह मठ बनवाया हुआ है। यह नगर वुल्फडीट्रिच का बड़ा कृतज्ञ है। यह लगभग सोलहवीं सदी के अंत की बात है। वुल्फडीट्रिच उस समय इटली में रहता था। इसने यहाँ के चर्चों और बड़े गिरजाघरों की नींव डाली। इसने प्राचीन जर्मन नगर को उजाड़ दिया और उसके स्थान पर महल और गिरजाघर बनवाये जो किसी भांति भी फ्लारेन्स और रोम से कम नहीं हैं। इन बड़े बड़े मकानों के बीच बड़ी सड़कें और चौराहे हैं। बड़े बागों में सुन्दर शिल्पकारी और पत्थर की मूर्तियां बनी हुई हैं। ये सभी ढंग इटैलियन हैं जो आस्ट्रिया और जर्मनी के बीच यहां देखने को मिलता है।

छोटी गलियों में घरों और दुकानों में बड़ी भीड़ रहती है। किन्तु अगर दीवालों के बीच के भाग से देखा

जाय तो पर्वती शिलाएँ शिखाएँ और किला दीख पड़ते हैं। इन्हीं गलियों में मोज़ार्ट पैदा हुआ था। वह घर जिसमें वह पैदा हुआ था। अब एक प्रकार का अजायबघर बन गया है। वहां पर उसका बड़ा पियानों कुछ उसके हस्त-लेख और बहुत से चित्र हैं। वह छोटी झोपड़ी जिसमें उसने अपना आखिरी बड़ा नाटक लिखा था वह वियना से लाकर कापुज़िनर वर्ग के ऊपर रक्खी गई है। इसके ऊपर कैपुचिन मठ है।

नगर के मुख्य चौराहे पर सैंतीस घंटे लगे हैं वह की सबसे बड़ी स्मृति है। कम से कम सप्ताह में एक बार मोज़ार्ट की धूम होती है। यह नगर गवइयों के लिये है। खासकर अगस्त के महीने में जब कि दुनिया का सर्वप्रसिद्ध गाने का त्योहार मनाया जाता है। इसमें ओपेरा और आरचेस्ट्रल गाने होते हैं। कोई भी व्यक्ति गाने से बच नहीं सकता क्योंकि कैरिलन घंटों के सिवा होहेनसाल्ज़वर्ग के किले का वड़ा घंटा (दि बुल आफ होहेनसाल्ज़वर्ग) सवेरे बजता है जिससे सारी आवाज़ छिप जाती है।

होहेनसाल्ज़वर्ग नगर भी एक सुन्दर नगर है।
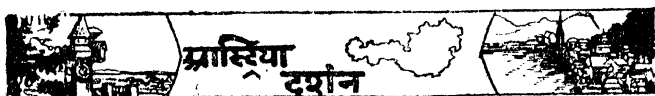
यहां पर बेनीडिकटाइन का मठ और सेन्ट पिटर्स किलर का भोजनालय है। यहां समीप ही अन्टरवर्ग है। इसको इसके नीचे इसलिये कहते हैं क्योंकि चारलामैन अभी सोता है। जब सारा जर्मन राज्य फिर से एक हो जावेगा तो वह राज्य करने को जी उठेगा। यहाँ मीरा वेल महल और सालज़ाच के बाग बहुत ही सुन्दर हैं।

साल्ज़बर्ग से थोड़ी दूर पर हेलब्रुन का महल तथा सुन्दर वाटिका है। इसको मार्क्स सिटीकस के उत्तराधिकारी और वुल्फडीट्रिच के भतीजे ने बनवाया था। यह घर इटैलियन ढंग का है। यहाँ की शिल्पकारी तथा चित्रकारी भी इटैलियन है। यहां की वाटिका ही सबसे अधिक आकर्षक है। क्योंकि अपने दोस्त और साथियों को प्रसन्न करने के लिये उसने अपने महल के पिछवाड़े छायादार मार्ग पर युक्ति, आविष्कार और चालाकी के खिलौने बनवाये थे। इनका कार्य एक नहर द्वारा होता है जो उसी रास्ते के नीचे होकर बहती है। इन खिलौनों में पहला एक पत्थर का मेज़ है जिसके चारों ओर स्टूल हैं। यह सब एक अर्धगोलार्द्ध दीवार पर अंकित हैं। जब मेहमान लोग बैठे निस्सन्देह चाय पानी करते रहते हैं तो एक बारगी एक छिपा हौज़ उलट जाता है और वे

फ़ुहारों के समूह से घिर जाते हैं। ये फ़ुहारे अदृश्य छिद्रों से निकले हैं और छः या सात फुट ऊपर जाते हैं। इसी प्रकार महल के पिछवाड़े का बरामदा पानी के एक पर्दे द्वारा कट जाता है और दो बारह-सिंघों की सींगों से पानी के फ़व्वारे गिरने लगते हैं। इसमें सभी प्रकार के लोहार और कारीगरों की मूर्तियां हैं जो सभी अपना अपना काम करते हैं। यहाँ डोरी से चलाई जाने वाली कठपुतली का एक थियेटर है। जिसमें सौ आदमियों से अधिक लोग हैं जो एक गुन्जान नगर में घूम रहे हैं। यह सभी कार्य उसी नहर द्वारा होता है। इसके सिवा बहुत सी गुफाएँ हैं जिनमें ऐसे ही आश्चर्यजनक कार्य और करामातें हैं।

ऊपरी आस्ट्रिया में साल्ज़ कमरगट का ज़िला है। यह जर्मन है क्योंकि यहां की नमक की खानें उन्हीं के हाथ में हैं। ज़िले के केन्द्र में वैडस्चल का नगर है। यह एक सुन्दर नगर पहाड़ों के बीच में है। यहां फ्रान्सिस जोज़फ रहा करता था। यहीं सब मिलाकर तीस से भी अधिक झीलें हैं किन्तु उनमें केवल पांच बड़ी हैं। इस नगर के समीप वुल्फगैंग झील है। यह

स्चाफ वर्ग की चट्टान के नीचे है। इसके दक्षिण हाल स्टाट की झील है। इस झील का नाम यहां के गाँव के नाम पर पड़ा है। यह गांव पहाड़ी टीले पर स्थित है और ऐसा प्रतीत होता है कि किसी भी समय यह झील में गिर पड़ेगा। यह स्थान दुनिया के सभी ऐतिहासिक पुरुषों को मालूम है क्योंकि यहां लोह-युग की कब्रें मिली हैं।
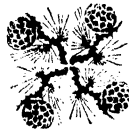
डैन्यूब नदी का मैदान

यह नदी काले बन (ब्लैक फारेस्ट) से निकलती है और काले सागर (ब्लैक सी) में जाकर गिरती है। इन स्थानों और रोमानिया को छोड़ कर छः और दूसरे देशों में होकर यह नदी बहती है। किन्तु आस्ट्रिया के बराबर सुन्दरता यह किसी भी देश को नहीं प्रदान करती। बेवेरियन और बोहेमियन आल्प्स के बीच जहाँ इन नदी इससे मिलती है वहीं से यह नदी आस्ट्रिया देश में प्रवेश करती है। दक्षिण-पूर्व की ओर चलकर यह नदी अपर और आस्ट्रिया होकर वियना पहुँचती है फिर कार्पेथियन श्रेणी के दक्षिण ओर होकर यह चेकोस्लोवेकिया और हंगरी की सीमा बनाती है।

इस नदी का पानी भूरे हरे रंग का है। कवि और गवइये इसे नीला डैन्यूब कहते हैं। यह नदी पहाड़ी तंग रास्तों से होकर बनों और घाटियों में होती हुई गुज़रती है। इसके किनारे और ऊपर पहाड़ी टीलों पर बड़े बड़े मठ, गिर्जे और क़िले बने हुये हैं। यह किले अब बुरी दशा में हैं। ये प्राचीन बहादुर डाकुओं के दुर्ग थे। कहीं कहीं पर पेड़ों से घिरे हुये द्वीप हैं। इनमें बतख, बगुला, और
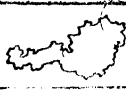
सारस आदि पक्षी रहते हैं। कहीं कहीं दोनों ओर
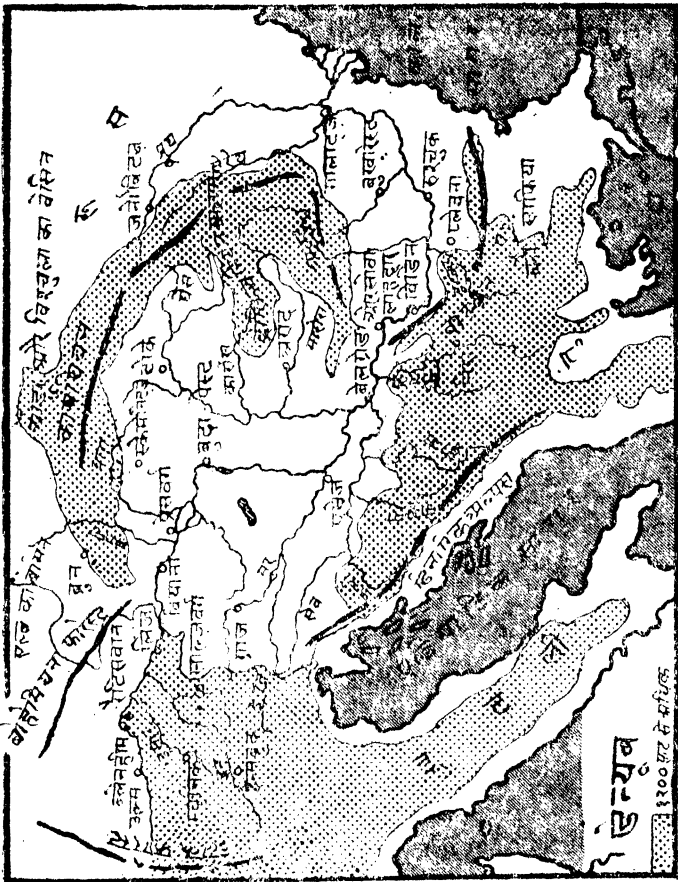
शफतालू और नाशपाती के उपवन हैं तो कहीं अंगूरों के लम्बे चौड़े बागों और लताओं की हरियाली है। इस प्रकार रंग बिरंगे गाँवों के बीच होती हुई यह नदी अपने मार्ग पर मदमाती चाल से चलती है। यह मार्ग व्यापार और सैर करने की दृष्टि से बहुत बढ़ा चढ़ा है। लादने और सैर करने वाली बोटों के झुण्ड लगातार आते जाते दिखाई देते हैं। लट्ठों के बड़े बड़े बेड़े रस्सों और लट्ठों द्वारा नीचे पानी की धार में बहा कर लाये जाते हैं। कभी कभी यह भीड़ इतनी लम्बी हो जाती है कि बेड़ा चलाने वालों को उन्हीं बेड़ों पर अपना झोपड़ा बनाना पड़ता है। स्टीमर के झुण्ड के झुण्ड गर्मियों में यात्रियों को लेकर चलते हैं। इसी भीड़ में वियना और दूसरे बड़े नगरों के इधर उधर बहुधा छोटी बोटें धक्का खाकर फट जाती हैं और डूब जाती हैं।

गर्मी के दिनों में यदि यात्री साऊ (जर्मनी) से सवेरे दिन निकलते स्टीमर पर चले तो संध्या समय वह वियना पहुँच जाता है। किन्तु अच्छा यह है कि यात्री दोपहर के पश्चात् पासू से स्टीमर पर बैठे और लिंज़ में आकर रात बस जावे दूसरे दिन वियना दोपहर होते
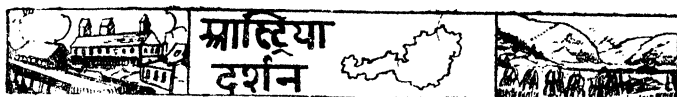
होते पहुँच जाय । लिंज़ अपर आस्ट्रिया की राजधानी है और काफी बड़ा नगर है ।

यद्यपि पोसाऊँ छोड़ने पर डैन्यूब का दाहिना किनारा आट्रिया में है तो भी यह आट्रिया और जर्मनी की सीमा
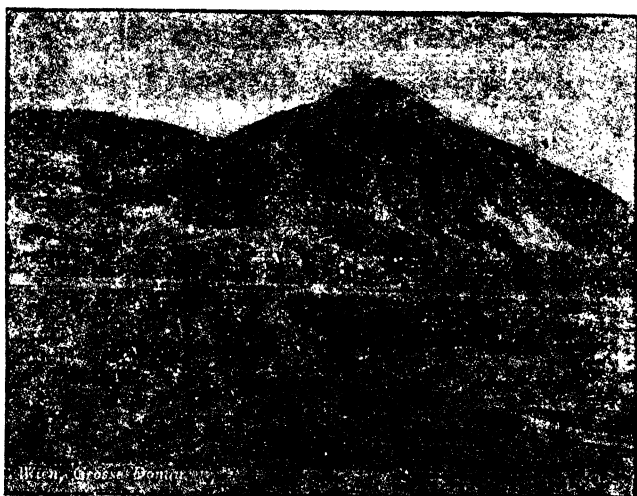
वियना के पास डेन्यूब (दूना) नदी का एक दृश्य

ओर मुड़ती है और सीधे नीचे उतरती है । इस ढाल नहीं है । यहाँ से १२ मील चलकर जोचेन्स्टीन चट्टान सीमा बनाती है । इस चट्टान के बाद नदी श्लोजन के पहाड़ी तंग रास्ते में होकर निकलती है । फिर उत्तर की

के ऊपर कस्र्वबौम किले बने हैं। इस मार्ग में नदी बहुत तंग और सकरी हो जाती है। यहाँ नदी का पानी बड़ी तेजी और चक्कर के साथ बहता है। पानी में एक बड़ी खलबली पैदा हो जाती है और मालूम होता है कि पानी खौलने लगा है। यहाँ पर पहाड़ नदी के ऊपर हजारों फुट ऊँचे उठे हैं। कहीं कहीं पर बन हैं। यहाँ की सुन्दरता एक भयानक और डरावनी है। ऐसचाच गाँव के नीचे आकर नदी फिर चौड़ी हो जाती है और बन के कारण नदी कई भागों में विभाजित हो जाती यहाँ पर बहुत से छोटे छोटे टापू बन जाते हैं। लिंज़ पहुंचकर फिर पानी की एक धार हो जाती है।

आस्ट्रिया में लिंज़ तीसरे दर्जे का नगर है। यहाँ लकड़ी के बड़े कारखाने के सिवा और भी बहुत से कारखाने हैं। इसके समीप ही सेन्ट फ्लोरियन और क्रेम्स-मुन्स्टर के मठ देखने योग्य हैं। यहां पर अपर आस्ट्रिया के सूबे की गवर्नमेन्ट के मकान देखने योग्य हैं। नदी के दूसरी ओर पोस्टलिङ्गवर्ग में दो चर्च तीर्थ यात्रा के हैं। यहाँ से लिंज़ का दृश्य रात को अच्छा दिखलाई पड़ता है।

लिंज़ से स्टीमर सबेरे नौ बजे छूटता है। नौ घंटे

के बाद यह स्ट्रीमर वियना पहुंच जाता है। रास्ते में २० छोटे छोटे बन्दरगाह पड़ते हैं। इन सभी छोटे छोटे गावों में उपबन और बड़ी बड़ी पुष्प बाटिकाएँ हैं। प्रत्येक बन्दरगाह पर कुछ न कुछ यात्री फूलों से लदे हुये आते हैं। इन घाटों पर नावों द्वारा लोग पार लगते हैं। यह नावें ऊँचे रस्से द्वारा पार लगती हैं।

लिंज़ से २० मील तक रास्ता समतल है। ग्रीन पहुँचकर फिर पहाड़ी मार्ग शुरू हो जाता है। कुछ ही दूर पर यहां नदी के दोनों ओर ऊँची चट्टानें आ जाती है। यहीं पोचलर्न का नगर है।

मेल्क से क्रेम्स तक का मार्ग बहुत ही प्रसिद्ध है। उसका नाम 'बाचाऊ' है। यहाँ बीस मील तक नदी पहाड़ी तंग रास्ते और चट्टानों के बीच होकर बहती है। इस मार्ग में पहाड़ों के ऊपर प्राचीन किले बने हुये हैं जिनके बारे में बड़ी बड़ी और कहानियाँ हैं। जहाँ से पहाड़ी टीले और क़िलों का आरम्भ होता है वहाँ से खड्ड का अंत हो जाता है। इनके बीच बीच अंगूर के बग़ीचे हैं।

मेल्क में बेनीडिक्टाइन का मठ नदी के ऊपर स्थित

है। यह आस्ट्रिया भर में सब से सुन्दर है। इसके बाद वाचाऊ की घाटी मिलती है फिर अगस्टीन का क़िला मिलता है। यह नदी के दूसरे किनारे पर पहाड़ी जंगली चट्टान पर स्थित है। श्रेकेन वाल्ड डाकू यहां पन्द्रहवीं सदी में राज्य करता था। यह अपने कैदियों को भूखा अगस्टीन के दीवालों के भीतर रखता था। मारे भूख के बहुत से प्राण त्याग देते थे और बहुत से पहाड़ की शिला से कूद कर जान दे देते थे। इस डाकू को यह तमाशा देखने में आनन्द आता था। वाचाऊ के अन्त में ड्यूरन्स्टीन का किला है। यह ऐसी बिगड़ी दशा में है कि इसका पहचानना कठिन है।

११९३ ई० की बात है कि जब रिचर्ड डी लायन क्रूसेड से वापस इंगलैंड को जा रहा था वह इस मार्ग से भेष बदल कर निकला क्योंकि उससे और पवित्र देश (होली लैण्ड) आस्ट्रिया के ड्यूक लियोपोल्ड से दुश्मनी थी। वियना के समीप वह पहचाना गया। और ड्यूरन्स्टीन के किले में डाल दिया गया। उसका राज्यभाट ब्लान्डेल उसकी खोज में देश देश मारा मारा फिरा। अन्त में एक दिन वह इस मार्ग से आ निकला

और दैव योग से ड्यूरन्स्टीन के कारागार की दीवार के नीचे निराश होकर आ बैठा। कुछ देर के बाद वह अपने को प्रसन्न करने के लिये एक गीत गाने लगा। यह गीत उसने और रिचर्ड ने मिलकर बनाया था। गाने का शब्द सुनकर रिचर्ड ऊपर से बोला। इस प्रकार रिचर्ड का पता लग गया। वह इस कारागार से निकाला गया। रिचर्ड और ब्लान्डर की याद में अब तक अँग्रेज़ रिचर्ड लोवेन हर्ज सराय में ड्यूरन्स्टीन को शराब पीते हैं।

इसके बाद खुला मैदान है जहाँ पर नहाने और तैरने के सरोवर हैं। यहाँ पर छोटे छोटे जंगली वृक्ष हैं। रास्ते में स्टेफन का गिरजाघर और पारटर का बाँध है।
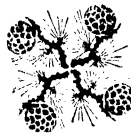
वियना नगर

वियना के बीचो बीच सेन्ट स्टेफेन्स का कैथीड्रल है। इसके ऊपर मीनार के किसी भी कमरे से सारा नगर देखा जा सकता है। पहले इस मीनार के कमरे में एक चौकीदार रहता था जो नगर की रखवाली करता था और जब कहीं अग्निकांड होता था तो यंत्र टेलिस्कोप और नक़शे द्वारा ठीक अग्नि कांड का स्थान नियत करके वह चौकीदार एक काग़ज़ पर लिखकर नीचे अफसर के पास फेंक देता था।

नगर के दक्षिण की ओर वीनर वाल्ड पहाड़ी है। इस पहाड़ी पर विकट बन हैं। पूर्व की ओर डेन्यूब का मैदान है। वियना लगभग सभी ओर जाल की भाँति बाहर की ओर फैला है, केवल एक ओर खेत इत्यादि हैं। कैथीड्रल के समीप ही बड़े बड़े महल और सुन्दर मकान हैं। इन मकानों और महलों के बीच बीच में पार्क, उपवन और खुले स्थान हैं। प्रातेर एक बहुत सुन्दर और बड़ा बाग है। यह बाग डैन्यूब नदी और नहर के बीच में है। यह नहर धनुष की डोर की भांति सड़कों और महलों के बीच फैली हुई है। सड़क पर यूनिवर्सिटी, टाऊन हाल, पार्लियामेन्ट हाउस, न्याय भवन, अजायब-

घर और ओपेरा घर इत्यादि बड़े बड़े भवन हैं। गोलाकार सड़क से सेन्ट स्टेफेन्स तक बहुत बड़ी संख्या में सड़कें और गलियाँ हैं।

कैथीड्रल के नीचे की छतें हरे, नीले, पीले आदि रंगों की हैं। पूर्वी भाग में एक ओर रिस्टोरेशन का साल १८३१ खुदा हुआ है और दूसरी ओर प्राचीन राजाओं का चिन्ह है। ऊपर से नीचे आने के लिये सात सौ सीढ़ियां उतरनी पड़ती हैं। इस सीढ़ी से दक्षिण के द्वार होकर कैथीड्रल में पहुँचते हैं। पश्चिमी द्वार से पूर्वी भाग दिखाई पड़ता है। इसके दोनों ओर रास्ते हैं। यह मार्ग काफी लम्बे चौड़े हैं। यह गोथिक शैली का बना हुआ है इसलिये बहुत ही सीधा सादा है। बीच में बहुत से बलिदान के स्थान हैं। इनके सामने सीधी आवाज़ में प्रार्थना की जाती है। लोहे के पर्दे के पीछे गिरजे के पूर्वी भाग होकर काले संगमरमर के बड़े ऊँचे आल्टर को रास्ता जाता है। यहां पर शिल्पकारी अच्छी है और चौदहवीं सदी के शीशे हैं।

सेन्ट स्टेफेन्स का कैथीड्रल वियना वालों के लिये बहुत उपयोगी है। यहां के लोग इसे आदर और भक्ति की दृष्टि से देखते हैं। और यह उनकी दिनचर्या का

एक भाग है। गिरजे के पूर्वी भाग में मेरी की अद्भुत मूर्ति हैं। जो ऊँचे आल्टर के ऊपर हैं। इसके सामने सदैव मनुष्य, लड़के, बूढ़े, जवान तथा वृद्ध स्त्रियां घुटनों के बल झुकते दिखाई देंगे। यहां अमीर और गरीब सभी प्रकार के मनुष्य आते हैं। बाहर दीवालों पर भी मूर्तियां हैं जहाँ पर रास्ता चलने वाले खड़े हो जाते हैं और थोड़ी देर तक प्रार्थना करके अपने कार्य में जाते हैं।

चौराहे के पास ही मकान के कोने में सरो पेड़ के तने में सेन्ट स्टेफेन्स की मूर्ति खड़ी है। यही नगर का ठीक केन्द्र कहा जाता है। यह लकड़ी का कुन्दा कीलों से भरा है। क्योंकि जितने भी लोहार कार्य आरम्भ करते थे वे सब पहले इसमें कील गाड़ते थे।

दाहिनी ओर चलने पर कापुचिन्स का चर्च मिलता है। इसके तहखाने में १२ महाराजों के कफ्फन रक्खे हैं और १२२ से अधिक दूसरे हैप्सवर्ग वालों के कफ्फन हैं। इन तमाम लोगों ने मिलकर आस्ट्रिया राज्य को बनाया है। १६१६ ई० में अंतिम राजा की मृत्यु हुई। उसमें पहले छः सौ साल से राजा लोग जिस

महल में रहते थे वह आज भी अच्छी दशा में मौजूद हैं। इसे हाफबर्ग कहते हैं। इसके अन्दर बहुत बड़ी सम्पत्ति है। ताज, हीरे, शाही तश्तरियां, चारलामेन के समय की स्मृतियां, नेपोलियन के चिन्ह, वाचनालय और स्पैनिश राइडिंग-स्कूल आदि वस्तुएँ यहां पर मौजूद हैं।

हाफ वर्ग से वोक्सगार्टेन मिलता है। यहाँ सुन्दर खेल के मैदान हैं। यहाँ फव्वारे बने हैं। इसके बाद गोले का वह भाग मिलता है जिसका नाम पंचायती राज्य की उत्पत्ति पर पड़ा है। इसका नाम १२ नवम्बर की अगूंठी है (रिंग आफ नवम्बर १२)। यह एक चौड़ी सड़क है इसके दोनों ओर यूनिवर्सिटी और पारलियामेन्ट हैं। इसके बाद टाऊन हाल के बड़े भवन हैं। टाऊन हाल के सामने गोथिक शैली के मेहराब हैं। उन पर चार बड़े मीनार और उनके घंटाघर हैं।

गोले के दूसरे ओर भी दो विशाल भवन हैं। इन दोनों के मध्य में मैरिया-थेरीसा की मूर्ति है। इन दोनों भवनों में एक तो एतिहासिक अजायबघर है और दूसरा कुन्सथिस्सरिचेज़ का भवन है। यहां पर सर्वोत्तम कला

की वस्तुएँ हैं। यह कला-कौशल के इतिहास का अजायब-घर हैप्सबर्ग घराने का सर्वोत्तम कार्य था। इसको चार सौ साल में इन लोगों ने इकट्ठा किया था। यह सभी अब प्रजातंत्र के अधिकार में है। चित्रकला की वस्तुएँ यहां दुनिया भर से अधिक हैं। इन चित्रों का चुनाव बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। कोई भी यात्री जो यहां आता है इस अजायबघर को अवश्य ही दो तीन बार देखता है। ड्यूरर की कला कार्यों में रूबेन्स सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यहां पर पीटर ब्रूघेल, आलसेन्टस अन्नटरपीस आदि बहुत सी वस्तुएँ इटैलियन कला की हैं। नीचे के भाग में १६ कमरे हैं। इन कमरों में हथियार और लड़ाई के सामान मौजूद हैं। यह बहुत पुराने हैं। यहाँ के टोरनामेन्ट बहुत प्रसिद्ध हैं। अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये यहाँ के इटैलियन और जर्मन खुदी हुई शिलाएँ हैं।

शोन ब्रुन स्थान शहर के पश्चिमी किनारे पर है। इसको बहुधा लोग दूसरा वर्सलीज़ (वर्साई) कहते हैं। यह मेरिया थेरीसा के रहने का स्थान था। यहां टहलने और खेलने के सुन्दर मैदान हैं। यहां पर रंग बिरंगे फूलों की

क्यारियाँ हैं। उपवन एक पार्क में जाकर समाप्त हो जाता है। पार्क के बीच में एक पहाड़ी है। इसके ऊपर चढ़कर सारा वियना नगर और आस पास के स्थान अच्छी तरह देखे जा सकते हैं। नीचे उपवन, छोटी झीलें तथा फव्वारे हैं। यह वस्तुएँ ऊपर से देखने में बहुत सुन्दर मालूम होती हैं। यहां टायरल का बगीचा है जिसमें हर तरह के वृक्ष लगे हुए हैं।

कहते हैं कि आस्ट्रिया में दो प्रकार के निवासी हैं :—(१) आस्ट्रियन (२) वियना वासी। इस कथन में बहुत कुछ सत्यता है। आस्ट्रिया के देहातियों और वियना के निवासियों के जीवन में ज़मीन आसमान का अन्तर है। यह लोग हज़ारों साल के प्राचीन नगर वियना के निवासी हैं।

वियना को देखने से पता चलता है कि यह नगर चहल पहल वाली दुनिया से कहीं अधिक दूर है। यह नगर एक दूसरी ही दुनिया है। यह दुनिया स्वप्न की दुनिया है जिसमें किसी को कोई परवाह नहीं है और जीवन का मुख्य कार्य गान विद्या, चित्रकारी और प्रेम है।

यहां पर आस्ट्रिया निवासियों के बल और निर्ब-

लता दोनों की अंतिम सीमायें मिलती हैं। वियना के के निवासी प्रसन्नचित्त और हँसमुख होते हैं। यह लोग आनन्द चाहने वाले होते हैं। यह लोग सभी वस्तुओं में अच्छी से अच्छी कला देखना चाहते हैं। अपनी ही भाँति यह लोग दूसरों को भी प्रसन्न और खुश देखना चाहते हैं। वे लोग कार्य-क्रम के अनुसार कार्य करने को नहीं पसन्द करते और समय के बन्धन को बिल्कुल नहीं चाहते। यही कारण है कि यहाँ सड़कों पर दूकानों में घड़ियाँ नहीं दिखाई पड़तीं। वियना के निवासी भूल जाने वाले व्यक्ति होते हैं। यह लोग दूसरों को कष्ट देना नहीं पसन्द करते और सभी वस्तुओं को हास्यप्रद बनाना चाहते हैं। जब कोई नाराज़ होता है तो यह लोग हँसने लगते हैं।

वियना के निवासी बात चीत करना बहुत पसंद करते हैं। उनको इस बात का सदैव शौक रहता है कि उनसे कोई बात चीत करे। वे दुकानों पर बैठे बैठे भी बातें करना पसंद करते हैं। बड़ी बड़ी दुकानों पर खरीदार उनसे मोल तोल की बातें भली भांति कर सकता है। भोजन करते समय उन्हें बात करने में बड़ा
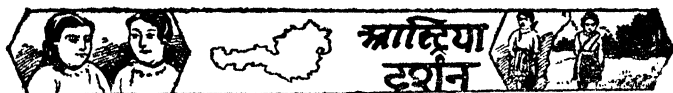
आनन्द आता है। खासकर वह काफी (क़हवा) पीने के स्थानों पर तो कई घंटे तक बात चीत करते बैठे रहते हैं। यहां यह लोग वियना की प्रसिद्ध काफी, सिगरेट और सिगार पीते हैं।

भोजन बनाने में यहां के लोग प्रसिद्ध हैं। बड़े बड़े भोजनालयों में हर एक प्रकार के भोजन बड़े सुन्दर ढंग से रक्खे जाते हैं जिनको देख कर लोग मुग्ध हो जाते हैं। यहां के निवासी दो तश्तरी बछड़े के मांस में छक जाते हैं। बछड़े का मांस यहां के लोग बहुत पसंद करते हैं और उसे कई प्रकार से बना कर सेवन करते हैं।

एक सच्चे वियना निवासी के लिये संगीत सब से आवश्यक वस्तु है। वियना में और स्थानों से अधिक सुन्दर गवैये पैदा हुये हैं। वुल्फगैंग मोज़र्ट साल्ज़वर्ग में पैदा हुआ था। इसने तीन वर्ष में गाना आरम्भ किया था और दस साल की अवस्था में राजा के सामने प्रदर्शन किया था। इसके सिवा जोज़ेफ हेडेन, बीथोवेन, फ्रांज़ स्चुवर्ट, जोज़फ लैनर, जोहन स्ट्रास आदि दुनिया के बड़े बड़े गाने बजाने वाले यहां पर रहे और अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करते रहे।

यात्रा

बुदापेस्ट से वियना जाने के लिये दो मार्ग हैं। डेन्यूब नदी का मार्ग अधिक मनोहर है। जो यात्री केवल छुट्टी मनाने के लिये निकलते हैं और भीड़ से तंग आ जाते हैं वे नदी के शान्त मार्ग को पसन्द करते हैं। डेन्यूब नदी में स्टीमर बराबर चला करते हैं। वे रेल से कुछ अधिक समय लेते हैं पर उनमें अधिक शान्ति रहती है। जब स्टीमर रात को बुदापेस्ट में आ लगते हैं तो उनकी बिजली की रोशनी बड़ी सुहावनी लगती है। उनको देखने के लिये बहुत से लोग किनारे पर खड़े रहते हैं।

मैंने इस्तम्बोल से वियना के लिये रेल का सीधा टिकट ले लिया था। इसलिये मुझे रेल द्वारा जाना आवश्यक हो गया। हंगारी के समतल देश को छोड़ने के बाद ज़मीन क्रमशः ऊँची होती जाती है। पर गरमी की ऋतु में प्रायः सब कहीं हरा भरा मिलता है। मैदान में घास और पहाड़ियों पर कई तरह के पेड़ मिलते हैं। होते होते कुछ ही घंटों में गाड़ी वियना पहुँच जाती है।
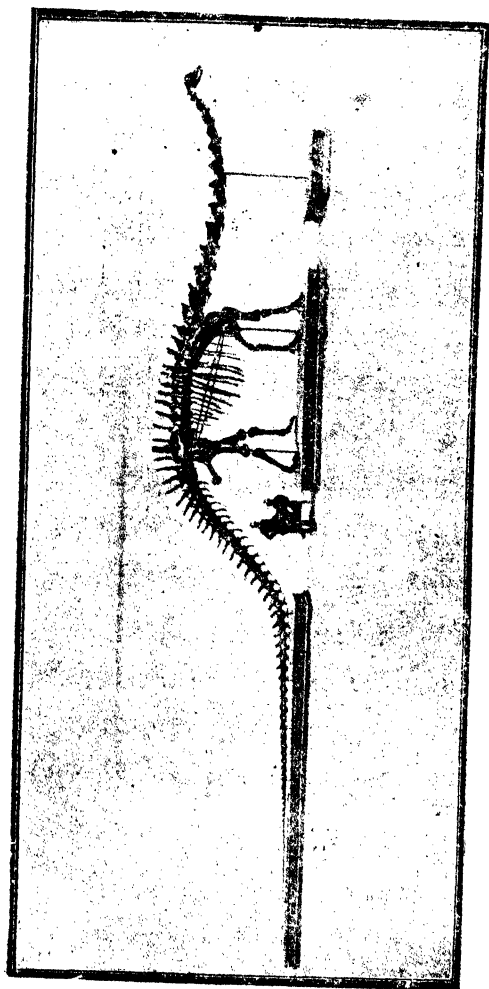
डिपलोडाकस कारनिगी नामक प्राचीन विचित्र (नष्ट) पशु है। इसका ढाँचा ही ढाँचा २४ मीटर (लगभग २७ गज़) लम्बा है।

बड़ी लड़ाई के बाद वियना (वियन) नगर का वैभव इतना घट गया कि कुछ लोग इसे विधवा नगरी कहने लगे। आस्ट्रिया—हङ्गारी का शक्तिशाली साम्राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया। साम्राज्य के क्षीण होने से इसके कारबार और व्यापार को बड़ा धक्का पहुंचा। जो प्रान्त पहले आस्ट्रिया के अन्तर्गत थे वे इसके विरोधी पड़ोसी बन गये। समुद्र के लिये आस्ट्रिया का द्वार एकदम बन्द हो गया। इसके शत्रु लोग इसके माल पर भारी भारी चुङ्गी लगाने लगे। पहले वियना शहर एक बड़े राज्य के बीच में राजधानी होने के लिये बड़ा अनुकूल नगर था। आजकल यह एक छोटे राज्य के एक सिरे पर स्थित है। फिर भी प्रकृति ने इस नगर को मध्य योरुप में अत्यन्त केन्द्रवर्ती नगर बनाया है। यहाँ पर उत्तर-दक्षिण के रेलमार्ग तथा पूर्व-पश्चिम के रेल और नदी-मार्ग मिलते हैं। यात्रियों के लिये इस समय भी वियना नगर एक आदर्श नगर है। यहाँ बन, पहाड़, नदी और मैदान ने नगर को बड़ी महत्वपूर्ण स्थिति प्रदान की है। यहाँ के विश्वविद्यालय इस समय भी योरुप भर में प्रसिद्ध हैं। डाक्टरी की शिक्षा लेने के

लिये दूर-दूर के विद्यार्थी यहाँ ग्राते हैं। यहाँ का आर्चेस्ट्रा (सङ्गीत-घर) योरुप में एक ही है। पर यहाँ भी लोगों में बड़ा ही नियन्त्रण है। गरमी की ऋतु का आखिरी
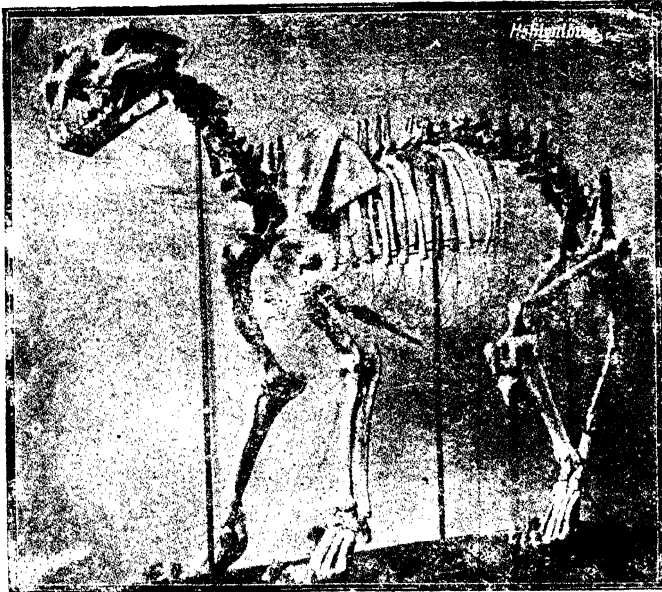
होहटेंटवे नाम के प्राचीन (नष्ट) पशु का ढांचा। वियना के प्राकृतिक अजायबघर से।

तमाशा था । मैं भी गया। दस हज़ार से ऊपर दर्शक थे। बैठने की सब जगह भर गई थी। ऊपरी मंज़िल पर

लेखक वियना के एक म्यूज़ियम के सामने

वियना के कुछ दृश्य

छठी पंक्ति में खड़े होने को जगह मिली। पर सब कहीं अजब शांति थी। गाने या बजाने के अवसर पर धीमी से धीमी आवाज़ सुनने में आती थी। हुल्लड़बाज़ी का कहीं नाम न था। यही नहीं जब बीच की छुट्टी के बाद
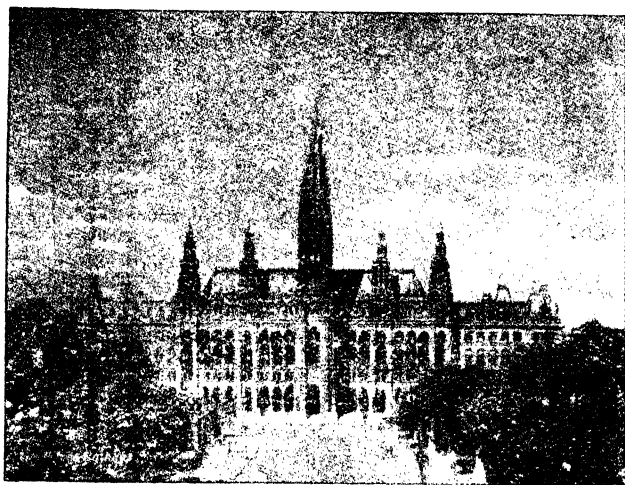
वियना की एक आलीशान इमारत

लोग फिर इकट्ठे हुये तो भी किसी ने दूसरे के अच्छे स्थान को लेने की कोशिश न की। यहाँ तक कि जो लोग जिस कतार में खड़े थे वे वहीं आकर खड़े हो गये।

यहाँ के अजायबघरों में शिक्षाप्रद सामग्री अपार है। इसको संचित करने के लिये यहाँ के दूरदर्शी लोगों ने सदियों से असंख्य धन व्यय किया है। प्राकृतिक इतिहास (National history museum) के अजायब
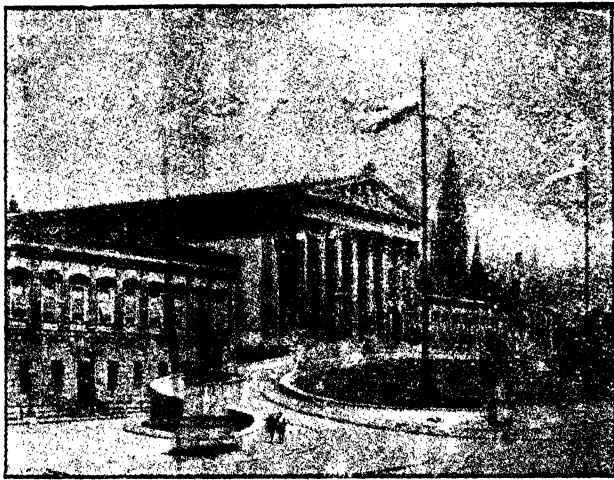
वियना की पार्ल्यामेंट

घर में सचमुच अजीब जानवरों का संग्रह है। भूगर्भ विद्या का अध्ययन यहाँ बड़ी सरलतापूर्वक किया जा सकता है। कई ऐसे जानवरों के ढांचे यहां मौजूद हैं जो अब से लाखों वर्ष पहले संसार में मौजूद थे। लेकिन

इस समय उनका एक भी साथी जीवित नहीं है। सन् १८४० ई० में भारतवर्ष में एक बड़ा भारी उल्कापात हुआ था। स्थानीय लोगों को छोड़कर हमारे देश के लोगों को शायद इसका पता भी न चला। लेकिन वही विशाल
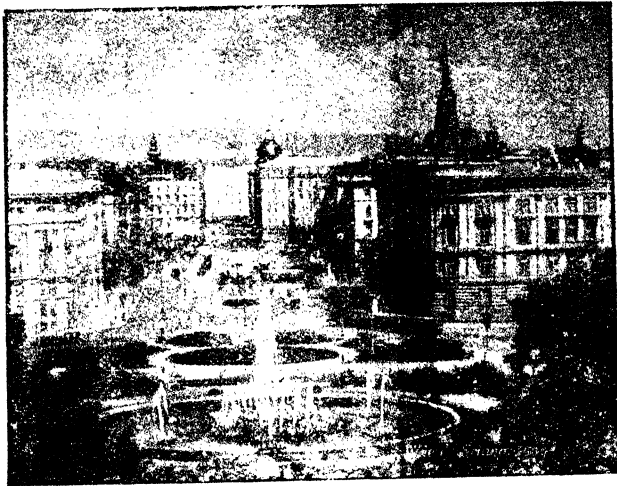
वियना का स्क्वाज़न वर्ग पार्क

उल्का यहाँ पर मौजूद है। इसी तरह से सभी युगों और सभी स्थानों की चट्टानों का संग्रह देखकर दंग रह जाना पड़ता है।

यहाँ के लोगों को खेल-कूद का भी बड़ा शौक
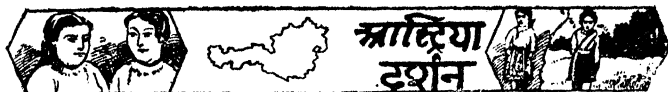
है। फुटबाल या हाकी की नामी मैच देखने के लिये टिकट मोल लेकर पचास-पचास हज़ार दर्शक पहुँचते हैं। यहां के प्रातेर में बड़ी चहल-पहल रहती है। तरह-तरह के झूले और हिंडोले हैं। सभी बिजली के जोर से चलते हैं। जो हिंडोला ११५ पृष्ठ में दिखाया गया है वह इतना ऊँचा है कि उसके ऊपरी भाग से वियना के ऊँचे से ऊँचे महल की छत देखी जा सकती है। यहीं पर एक स्थान में कृत्रिम कन्दरायें और पुल बने हैं। छोटी-छोटी कुर्सीनुमा गाड़ियाँ बड़ी तेजी से गुफा के भीतर घुसती हैं। सभी पुल के ऊपर चढ़ती हैं। प्रत्येक खेल का टिकट अलग लेना पड़ता है। फिर भी सब कहीं आधी रात तक भीड़ रहती है।

छुट्टी के दिन दूर-दूर की पहाड़ियों पर मेला सा लगा रहता है। ऊँचे नीचे सभी रास्तों पर लोगों की टोलियाँ मिलती हैं। पर रास्ते से कुछ दूर थोड़ी थोड़ी दूर पर स्त्री पुरुष दिन में भी ऐसी क्रीड़ा करते मिलते हैं कि किसी भी सभ्य मनुष्य को मुँह फेर कर चलना पड़ता है। यह हाल योरुप के प्रायः सभी देशों का है। मनमें प्रश्न होता है कि ये लोग किस तरह आधी दुनियाँ पर अपना राज्य करते हैं? उत्तर सीधा है। इनमें

राष्ट्रीय संगठन है। अपने देश की पुकार सुनते ही युवक अपनी युवतियों को छोड़कर देश पर प्राण अर्पण करने के लिये चल देते हैं। हम लोग दिखावटी धर्म के लिये एक दूसरे का सिर फोड़ते हैं। लेकिन राष्ट्रीय पुकार को या तो सुनी अनसुनी कर लेते हैं या उसको ठुकराने के लिये तरह तरह के बहाने ढूँढ़ लेते हैं। वियना के राजमहल, पार्ल्यामेन्ट भवन, गिर्जाघर और दूसरे स्थानों को देखने में कई दिन लगाये जा सकते हैं। एक दिन मैं उस स्थान को देखने गया। जहाँ स्वर्गीय पटेल जी ठहरे हुये थे।

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन ।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप ।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह ।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़ेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना ।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप ।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डिगामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—डे्क, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन ।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग ।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्जी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस ।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी ।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल) ।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज, रेल, हवाई जहाज़ ।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन ।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का ४०)रु० ।